हाफ़िज़ की ग़ज़लें

(काव्यानुवाद)

शंकर माहेश्वरी

हाफ़िज़ की ग़ज़लें (काव्यानुवाद)
शंकर माहेश्वरी © लेखकाधीन

प्रकाशक :
माहेश्वरी पुस्तकालय
4, शोभाराम वैशाख स्ट्रीट
कोलकाता - 700 007

प्रथम संस्करण : जुलआई 2002

मूल्य : डेढ़ सौ रुपये
$10.00

आवरण चित्र : विक्रम नेवर

मुद्रक :
छपते छपते प्रकाशन प्रा. लि.
26 सी, क्रीक रो, कोलकाता-14
दूरभाष : 246 1488/8374

Hafiz ki Ghazalein, transcreation of Poetries from persion to Hin
Shankar Maheshwari
Published by Maheshwari Pustakalaya, 4, Sovaram Basak St
Kolkata - 700 007
First Edition 7/7/2002 Price : Rs. 1

समर्पण

तेरा तुझको सौंपिया
क्या लागै है मोर

इन शब्दों के साथ
मित्रवर श्री रेवतीलाल शाह को

–शंकर माहेश्वरी

भूमिका

बादशाहों के फ़र्मान और हुक्मरानों के हुक्म वक्त के रेगिस्तान में ग़ायब हो जाते हैं लेकिन कवियों की वाणी दिलों की धड़कन बन कर सदियों सीनों में गूंजती रहती है। फ़ारसी भाषा संसार की मधुरतम भाषाओं में मानी जाती है। पाश्चात्य जगत् में आज भी इस भाषा की कविताओं पर सैकड़ों विद्वान काम कर रहे हैं। भारत वर्ष में सदियों तक यह भाषा बुद्धिजीवियों की भाषा रही। मुसलमानों के शासनकाल में इस्लाम की धार्मिक भाषा अरबी दरबारी भाषा नहीं थी बल्कि फारसी थी। भारतवर्ष के कुछ फ़ारसी शाइरों हज़्रत अमीर ख़ुसरो और बेदिल आदि पर इरान को गर्व है।

फ़ारसी भाषा के प्रथम पंक्ति के चार शाइर हैं 'फ़िर्दौसी, मौलाना जलाल-उद-दीन 'रूमी', 'शैख़ सा'दी और 'हाफ़िज़ शीराज़ी। और उनकी पुस्तकें हैं 'शाहनामा', 'मसनवी', 'गुलिस्ताँ, बोस्ताँ' और दीवान-ए-हाफ़िज क्रमशः। उमर ख़य्याम की ख्याति का कारण उनका अंग्रेजी अनुवाद है वरना यूँ समझिये कि ख़य्याम रसखान हैं तो हाफ़िज़ तुलसीदास।

कुछ दशकों पहले इंग्लैंड के फ़ारसी विद्वानों में यह बहस छिड़ी कि फ़ारसी का शीर्षस्थ शाइर कौन है, स्वाभविक था उपरोक्त चार नाम सामने आये और फ़ैसला मुश्किल में पड़ गया। एक विद्वान ने कहा-अगर हाइड पार्क में किसी एक फ़ारसी शाइर की मूर्ति लगायें तो किसकी मूर्ति होनी चाहिए और सब एक ज़ुबाँ होकर पुकार उठे 'ख़्वाजः हाफ़िज़ शीराज़ी'। अब फैसला आप लोगों के हाथ में है।

'फ़िर्दौसी' का 'शाहनाम' बादशाहों की कहानी पर आधारित है लेकिन काव्यात्मकता का उत्कर्ष देखते बनता है। इस्लाम के प्रभाव के कारण फ़ारसी में बहुत से अरबी के शब्द प्रचलन में आ गये और क़रीब क़रीब सभी शाइरों के यहाँ उनका प्रयोग है परन्तु शाहनामा शुद्ध फारसी में है। (पाठकों की जानकारी के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत है-सितम और ज़ुल्म-इनमें 'सितम' फ़ारसी है और 'ज़ुल्म' अरबी। फ़ारसी में कर्ता और कर्म बनते हैं सितमगर और सितमज़दा जबकि अरबी में 'ज़ालिम' और 'मज़लूम' हो जाते हैं। (अव्यय और प्रत्यय की आवश्यकता नहीं होती।)

फ़िर्दौसी की शायरी की कसावट का अन्दाज़ लगाने के लिए-एक घटना के वर्णन में कहते हैं

'निशस्तन्द, गुफ़तन्द, बर्ख़ास्तन्द'

(बैठे, बातचीत की, विसर्जित हो गए)

ईरान के शहर शीराज का यह सौभाग्य है कि प्रथम पंक्ति के दो ग़ज़लगो शाइर शैख़ सा'दी और हाफ़िज़ शीराज़ी वहाँ पैदा हुए। सा'दी के बाद ग़ज़ल की ऊंचाई लांघना जरा मुश्किल था मगर बुलबुल-ए-शीराज़ 'हाफ़िज़ शीराज़ी' ने नई ऊंचाईयों को छुआ।

मौलाना जलाल-उद-दीन रूमी की मसनवी पर लिखा होता है 'हस्त क़ुर्आन दर ज़ुबान-ए-पहलवी (यह फ़ारसी भाषा में क़ुर्आन है) और दीवान-ए-हाफ़िज़ से फलादेश निकाला जाता है। आम आदमी की क्या क्षमता है कि तुलना करे। परन्तु एक बात साफ़ है कि मौलाना 'रूमी' के यहाँ 'सत्य' की प्राथमिकता है तो ख़्वाजा 'हाफ़िज़' के यहाँ 'सौन्दर्य' की। उदाहरण के लिए मौलाना 'रूमी' का शेर मुलाहिजा हो।

हर लहजा बशक्ले बुत-ए-अय्यार बरामद दिलबुर्द व निहाँशुद
हर दम ब लिबास-ए-दिगर आँ यार बरामद गह पीर-ओ-जवाँ शुद

(हर तरह किसी न किसी शक्ल में वह चालाक मूरत आई, दिल लिया और ओझल हो गई। हर पल भिन्न भिन्न परिधान में वह दोस्त आया कभी बूढ़ा और कभी जवान बन कर)

इसमें दिल छीनने की और यार की चर्चा है परन्तु यहाँ सत्य की अभिव्यक्ति ही ध्वनित होती है।

ऊपर दीवान-ए-हाफ़िज़ का ज़िक्र आया है तो दीवान का अर्थ समझ लेना अनुचित न होगा। हर शाइर का दीवान नहीं बन सकता-दीवान की शर्त यह है कि शाइर ने उस लिपि के अधिकांश अक्षरों को अन्त्यानुप्रास के रूप में प्रयोग किया हो। उर्दू में इक़बाल, फ़िराक़ या जोश के कुलियात हो सकते हैं दीवान नहीं जबकि मीर और ग़ालिब के दीवान हैं।

बाबा तुलसीदास की रामचरित मानस से फलादेश निकाले जाते हैं यह परम्परा भारतवर्ष में नहीं थी। हाफ़िज़ शीराज़ी, बाबा से दो सौ अढ़ाई सौ साल पहले थे और तब तक भारत का साहित्यिक जगत सभी सूफ़ी कवियों से बख़ूबी परिचित हो चुका था। बाबा को जहाँ भी कोई ख़ूबी मिली उसे रामचरित मानस में समाहित करने की चेष्टा की। मुझे लगता है बाबा तुलसीदास को यह खयाल वहीं से आया। दीवान-ए-हाफ़िज़ से फ़लादेश निकालने की परम्परा बड़ी पुरानी रही

है। ख़ुदा बख़्श लाइब्रेरी में दीवान-ए-हाफ़िज़ की वह प्रति सुरक्षित है जिससे सभी मुगल बादशाहों ने फ़ाल (फलादेश) निकाली है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता हाफ़िज़ शीराज़ी की ग़ज़ल का पाठ प्रार्थना की तरह करते थे। रवि बाबू ख़्वाजा हाफ़िज़ की कब्र पर श्रद्धांजलि अर्पित करने शीराज़ गए थे, उन्हें कहा गया कि आप कोई प्रश्न अपने आप में सोच लें और इस तालिका के एक अक्षर पर अंगुली रख दें। जब फाल निकाली गई तो रवि बाबू ने कहा कि मुझे उत्तर मिल गया। फ़ाल का शेर था 'चिन्ता मत करो खोया यूसुफ़ वापस आ जाएगा' रवि बाबू का प्रश्न था 'क्या भारत को आज़ादी मिल जाएगी?'

यूँ भी ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी का रिश्ता भारतवर्ष से बड़ा गहरा है। हाफ़िज़ के समय में बंगाल के गवर्नर थे ग़ियास-उद-दीन (आज़म शाह), उन्होंने फ़ारसी में एक मतले का मिस्रा कह कर ग़ज़ल पूरी करने के लिए हाफ़िज़ को भेज दी थी और हाफ़िज़ ने ग़ज़ल पूरी करके बंगाल भिजवाई थी। इस ग़ज़ल के तीन शे'रों का (शंकर बाबू का अनुवाद प्रस्तुत करता हूं)

पारस की यह मीठी मिसरी जाती है देखो बंगाल
इससे भारत के सब तोते हो जायेंगे शक्करख़ोर

देश काल का अतिक्रमण करती कविता की गति देखो
एक रात का शिशु चलता ज्यों एक साल के रस्ते पर

नृपति ग़ियास-उद-दीन सभा का जो पूरा करना है शौक़
तो फिर चुप मत रह तू हाफ़िज़ रुदन करेगा तुझे सकाम

शाह ग़ियास-उद-दीन बंगाल की गद्दी पर ईसवी सन् 1389-1410 तक रहते हैं और हाफ़िज़ शीराज़ी का देहान्त 1389 में होता है, लगता है सिंहासनारूढ़ होते ही उन्होंने इस ग़ज़ल के लिए निवेदन किया था और ख़्वाजा हाफ़िज़ की आख़री ग़ज़लों में से एक थी।

यह बात शिष्टाचार के विरुद्ध है किन्तु मानव स्वभाव है, अंग्रेज, गोरे का, गोरा अंग्रेज का पर्याय बन गए हैं इसी तरह कलुआ नीग्रो का और नीग्रो काले का।

'हिन्दू' शब्द निश्चय ही 'सिन्धु' से बना और 'हिन्दू' उस वक़्त ईरानियों में भारतवासियों के लिए प्रयुक्त था। ईरानी अपेक्षाकृत सुन्दर थे और उनकी अपेक्षा में तुर्क सुन्दरतर थे। उस वक़्त की फ़ारसी में 'तुर्क' शब्द का प्रयोग सुन्दर के लिए

और हिन्दू काले के लिए होता था। हाफ़िज़ शीराज़ी के एक शेर में दोनों शब्द प्रयुक्त है।

अगर आँ तुर्क-ए-शीराज़ी बदस्त आरद दिल-ए-मारा
बख़ाल-ए-हिन्दूश बख़्शम समरकंद-ओ-बुख़ारारा।

अनुवाद-

वह शीराज़ सुन्दरी मेरा हृदय थाम ले अपने हाथ
समरकन्द भी और बुखारा तो उसके तिल पर वारूं।

अनुवाद में छंद के लिहाज से शंकर बाबू ने तिल का विशेपण प्रयोग नहीं किया जो कि मूल में है (ख़ाल-ए-हिन्दूश=उसका काला तिल)

इस शेर से जुड़ी हुई एक दिलचस्प घटना है। 'समरक़न्द' और 'बुख़ारा' उज़बैकिस्तान के शहर हैं जो अपनी ख़ूबसूरती और विकास के आधार पर उस वक्त विश्व-विख्यात थे। उन दिनों वहाँ का शासक था तैमूर लंग (यह शब्द तिमुर है) जिसने भारतवर्ष पर हमला किया था और ईरान पर भी। कहते हैं जब वह शीराज़ पहुंचा तो उसने ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी को मिलने के लिए बुलवाया और कहा कि हम इतनी मेहनत से अपने शहर विकसित करते हैं और आप किसी सुन्दरी के तिल पर मोहित हो कर बख़्श देते हैं। तैमुर जैसे ज़ालिम बादशाह के सामने उस महाकवि की हाज़िर जवाबी ने रक्षा की। हाफ़िज़ का जवाब था 'हुजूर इस औदार्य के कारण ही अभावग्रस्त हूँ' बादशाह को हँसी आ गई और कवि पुरस्कृत हुआ।

भारतवर्ष में कश्मीरी सुन्दर थे, एक शे'र में ख़्वाजा साहब कहते हैं

ज़ शेर-ए-हाफ़िज़-ए-शीराज़ी मीगोयन्द व मीरक़्संद
सियाह चश्मान-ए-कश्मीरी व तुर्कान-ए-समरक़न्दी

हाफ़िज़ के शेर को पढ़ती हैं और नाचती हैं कश्मीर की श्यामाख्यायें एवं समरक़ंद की सुन्दरियां। (उर्दू एवं फ़ारसी में 'काली आंखों वाली' सुन्दरी का पर्याय है।)

'हाफ़िज़'का अर्थ रक्षक भी है और वह व्यक्ति जिसे कुर्आन शरीफ़ मुखस्त हो। महाकवि को क़ुर्आन मुखस्त थी। वैसे इनका नाम मुहम्मद शम्स-उद-दीन था।

· एक तरफ़ हाफ़िज़ थे और दूसरी तरफ़ सुरा प्रेमी (ग़ालिब की तरह आधा मुसलमान कहिए)। प्रसादजी के शब्दों में

था एक हाथ में कर्मकलश वसुधा जीवन रस सार लिए
दूसरा विचारों के नभ को था मधुर अभय अवलम्ब दिए

सुरा प्रेम में कहते हैं

पूजा का पाटम्बर बंधक रख कर मधु को पाना
अच्छा है, पोथियाँ निरर्थक बह जायें मदिरा में

(अनुवाद)

हाफ़िज़ शीराज़ी की क़रीब-क़रीब इन्हीं पचास ग़ज़लों का अनुवाद पहले 1980 में बंगला भाषा में शीर्षस्थ कवि सुभाष मुखोपाध्याय ने किया था जिन्हें उन्हीं सालों 'देश' पत्रिका में धारावाहिक स्व. सागरमय घोष ने प्रकाशित किया। किताब की शक्ल में आनन्द पब्लीसरज़ ने 'हाफ़िज़ेर कविता' शीर्षक से प्रकाशित किया जिसके तीन चार संस्करण छप चुके हैं और दस हज़ार से ऊपर प्रतियां बिक चुकी हैं।

पुरातन साहित्य के क्षेत्र में प्रामाणिकता बड़ा जटिल और श्रम साध्य काम है, क्षेपक छाँट पाना हर एक के बूते का काम नहीं है। कई बार शिष्यगण अपने गुरु का भोग लगा कर लिख देते हैं और संकलन कर्ता की असावधानी से वह मूल में सम्मिलित कर लिया जाता है। अगर स्तर की तुला पर परीक्षा की जाए तो सबसे बड़ा ख़तरा यह होता है कि रचनाकार के आरम्भिक काल की रचना अलग कर दी जाती हैं और यह बहुत बड़ा अनर्थ है।

सुभाष बाबू और शंकर बाबू वाले चयन में काफ़ी हद तक हम आश्वस्त हो सकते हैं कि इनमें क्षेपक नहीं हैं।

फ़ारसी या उर्दू साहित्य में क़सीदा (प्रशस्ति) एक अलग और पूर्णतः विकसित काव्य शैली है। (यदि यह प्रशस्ति ख़ुदा की शान में हो तो हम्द और पैग़म्बर की शान में हो तो नात कहलाती है)।

ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी ने बहुत से क़सीदे भी कहे हैं और उनके दीवान के कुछ नुस्ख़ों में एक क़सीदा हज़रत अली पर मिलता है, उसमें प्रशंसा करते हुए 'सरदार' शब्द का प्रयोग भी है। तीन बार अली सरदार शब्द आता है।

अ'ली सरदार जा'फ़री फ़ारसी भाषा के भी बहुत बड़े विद्वान थे और उनका अध्ययन बहुत गहरा था। एक बार कहने लगे 'भई! हाफ़िज़ ने उस क़सीदे में तीन बार हमारा नाम लिया है' और फ़ौरन कहा 'लेकिन वह क़सीदा क्षेपक है'।

ईसवी 1982 में सलिल चौधरी द्वारा आयोजित एक मुशायरे में अली सरदार जा'फ़री भी आये और मजरूह सुल्तानपुरी भी। दुपहर को सरदार जा'फ़री को शंकर बाबू का अनुवाद सुनाया तो इस क़दर प्रभावित हुए कि शाम की बैठक में

मजरूह की मौजूदगी में दोवारा सुनाने के लिए कहा। अनुवाद सुन कर मजरूह ने कहा कि इसमें हाफ़िज़ का सौती आहंग (संगीतात्मकता) क़ायम है। दो इतने वड़े काव्य और संगीत के मर्मज्ञों की ऐसी दाद से बढ़ कर और प्रमाण पत क्या होगा।

शंकर वावू के अनुवाद पर मोहित होकर जगन्नाथ 'आज़ाद' साहव ने उस पर भूमिका लिखी है जो इस संग्रह में शामिल की गई है। (जगन्नाथ आज़ाद वहुत वड़े शाइर भी हैं, विद्वान भी। इनके पिता तिलोक चंद 'महरूम' भी विख्यात शाइर थे।) पाकिस्तान का पहला राष्ट्रीय गीत इनसे लिखवाया गया था जिसे मुहम्मद अली जिन्हा के वाद ख़ारिज कर दिया गया था-पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में अल्लामा इकवाल पर इनसे वड़ा विद्वान कोई नहीं है। इन्होंने फ़ारसी भाषा और साहित्य पर लाहौर से एम.ए. किया था अत: ये ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी के काव्य के मर्मज्ञ हैं।

अनुवाद वड़ा मुश्किल काम है, मूल का 20-25 फ़ीसदी ही शायद सम्प्रेषित हो पाता है परन्तु अतिरिक्त इसके दूसरी भाषाओं के साहित्य से परिचित होने का कोई रास्ता भी नहीं है। किसी भी भाषा को विकसित विशेषण प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें विश्वभर की अधिकांश कृतियों के अनुवाद उपलब्ध हों। हिन्दी भाषा के विकास की गति में शंकर माहेश्वरी का यह अनुवाद एक संग मील रहेगा।

यह विचारधारा सही लगती है कि शृंगार से पहले अद्भुत आता है। किसी छवि को देख कर हम विस्मित होते हैं और फिर, आकर्षण प्यार का केन्द्र बिन्दु वनता है जिसके गिर्द संयोग वियोग हर्ष और विषाद रात-दिन की तरह घूमते रहते हैं। यह विस्मय सुन्दर से सुन्दरतर और सुन्दरतम की तलाश में मनुष्य को ज्ञान की राह पर आगे बढ़ाता है। हाफ़िज़ शीराज़ी ने अनेक स्थान पर विस्मय की स्थिति का वर्णन किया है। मन्सूर सूफ़ी संत थे जो अनल हक़ (अहम ब्रह्मास्मि) कहा करते थे और द्वैत के पक्षधरों ने उन्हें दोषी ठहरा कर सूली पर चढ़ा दिया था। इस पर अलग-अलग कवियों ने अलग-अलग तरह से विचार किया है, मौलाना जलाल-उद-दीन रूमी का कथन है 'वह मन्सूर नहीं था जो सूली पर था ना समझों को भ्रम हुआ था।' (इसका आशय यह है कि पार्थव शरीर मन्सूर नहीं था) जबकि हाफ़िज़ शीराज़ी कहते हैं कि अद्वैत के पथ पर मन्सूर का कथन खता (भूल) है क्योंकि उस (विस्मय की स्थिति में होंट कैसे खुले और जीभ कैसे हिली)।

विस्मय और आश्चर्य पर्याय कहे जा सकते हैं परन्तु वण्डर के अनुवाद के रूप में आश्चर्य शब्द सीमित हो गया है। हम भौतिक जगत की कुछ वस्तुओं तक ही

आश्चर्य समझ पाते हैं। सुभाष बाबू को 'आश्चर्जो' के अर्थ तक पहुंचने में कुछ देर लगी तो उन्होंने कहा था 'अंग्रेजी कोतो खोति (क्षति) कोरेचे'।

एक ग़ज़ल में हाफ़िज़ कहते हैं 'तेरा प्यार विस्मय का वृक्ष है और तेरा मिलन विस्मय की पराकाष्ठा। जिस दिशा में भी कान लगाते हैं विस्मय की ध्वनि आती है।'

फ़ारसी शायरी तीन बिन्दुओं के गिर्द घूमती है। प्यार, मदिरा और दर्शन (सूफ़ीवाद)

किसी भी शाइर की प्रेम कविता से उसके प्रियतम का अन्दाज़ा लग जाता है, कुछ लोगों का प्यार मांसल से ऊपर नहीं उठ पाता है। हाफ़िज़ का प्रियतम विराट है। एक शेर में कहते हैं

उस असीम रूप के समक्ष मेरा प्यार अकिंचन है। रूप रंग तिल और रोम जैसे अलंकारों की उस आभा को आवश्यकता नहीं है।

ऐसे अनेक उदाहरण आपको मिलेंगे। हर भाषा की कविता में प्रियतम के मुख की उपमा अलग अलग तरह से चन्द्रमा के साथ दी गई है। हाफ़िज़ के एक शेर की कल्पना अछूती है। कहते हैं

एक रात को चन्दरमा ने की बराबरी उन गालों से
दूजी रात से देखा उसको शर्म के मारे सिकुड़ रहा था।

ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी को शिल्प में भी दक्षता प्राप्त थी। कई मुश्किल रदीफ़ हैं 'नेस्त कि नेस्त' (नहीं है कि नहीं है) इसी तरह एक मुश्किल रदीफ़ है 'हस्त कि बूद' (है कि जो था, उर्दू में पहली रदीफ तो कहीं नज़र से गुज़री ही नहीं दूसरी भी विरल है जिसमें फ़िराक साहब ने एक लम्बी और ख़ूबसूरत ग़ज़ल कही है। नमूने के तौर पर मक़्ता पेश कर रहा हूं

तीरा बख़्ती (1)दिल-ए-सोज़ाँ (2) की मिटती ही नहीं फ़िराक़
शम्अ के सर पर आज वही धुआँ है कि जो था।

(1) अंधेरी किस्मत (2) जलता हुआ दिल

दीवान में लगभग सभी अक्षर अन्त्यानुप्रास के रूप में प्रयुक्त होते हैं। 'ज़ाद' अक्षर से बनने वाले 'आ ज़' शब्द विरल हैं (बियाज़, मिफ़्राज़, मामाज़ आदि) हाफ़िज़ के पुष्ट ज्ञान ने इन काफ़ियों का निर्वाह बखूबी किया है और गर्वोक्ति के अन्तर्गत कहते हैं

मुश्किल बहुत 'ज़ाद' की तुक है इससे ग़ज़ल नहीं बनती
लेकिन शायद तुझसे हाफ़िज़ होवे भावों का विस्तार।

हाफ़िज़ शीराज़ी की जन्म तिथि या वर्ष प्रामाणिक रूप से पता नहीं है परन्तु उन्होंने दीर्घायु तक सर्जनात्मक कार्य किया। उनके पिता ही 'शीराज़' शहर में आये, उनके दो भाई जीविकोपार्जन हेतु शीराज़ छोड़कर चले गये। उनके दो बेटों का देहान्त उनके जीवनकाल में ही हो गया। एक तो भारत भूमि में ही दिवंगत हुए। उनके जीवनकाल में बादशाहत बदलती रही और अशान्ति का युग रहा। एक बादशाह ने जब शराब बन्दी की तो ख़्वाजा साहब ने शराब की मौत पर एक मर्सिया भी कहा था और दूसरे पाबन्दी हटा देने की खुशी में एक क़सीदा भी कहा। ई 1389 में यह शाहबाज़ सिद्रानशीं इस खराबाबाद को छोड़ कर चला गया।

कविता का उच्चतम उद्देश्य है सौन्दर्य बोध एवं प्रज्ञानुभूति को जगाना। इस महाकवि की हर पंक्ति से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है। दुनिया के श्रेष्ठतम कवियों में इनकी गणना है।

ऐसे कवि का अनुवाद बड़ा कठिन कार्य है और शंकर बाबू ने इस काम को बखूबी निबाहा है। फैसला पाठकों के हाथ है।

लिप्यन्तर

अनुवाद के साथ फ़ारसी मूल भी देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया गया है। वैसे तो लिप्यन्तर का एक अन्तरराष्ट्रीय मानक है परन्तु सुविधा के चलते उसका अनुकरण नहीं किया गया है।

फ़ारसी में 'क' 'ख' 'ग' फ और ज की दो ध्वनियाँ होती हैं (ज की तीन होती हैं) हिन्दी उच्चारण से भिन्न ध्वनि को अलगाने के लिए अक्षर के नीचे (०) बिन्दी लगा दी गई है।

'आ' की भी दो ध्वनियाँ हैं एक ह्रस्व है जैसे ज़माना की बजाए ज़मानः लिखा गया है। इसमें ना का उच्चारण ह्रस्व है अतः 'आ' की मात्रा के स्थान पर विसर्ग संकेत प्रयुक्त है।

दीवाने हाफ़िज़ की बजाए दीवान-ए-हाफ़िज़ लिखा गया है। पहली बात तो यह है 'दीवाने' लिखने से श्लिष्ट होकर हाफ़िज़ का विशेषण भी हो सकता है जो कि अनर्थ होगा-दूसरे फारसी भाषा में 'ए' की मात्रा लगने से एक हो जाता है, जैसे बुलबुले का अर्थ एक बुलबुल हो जाता है।

रेवती लाल शाह

संस्तुति

मैं इस बात से अनभिज्ञ था कि ख़्वाजा हाफ़िज़ शीराजी का काव्यात्मक हिन्दी अनुवाद किसी कवि ने किया है : अतः मैंने शंकर माहेश्वरीजी का किया हुआ अनुवाद अद्योपान्त बड़े गौर से सुना और मुझे इस बात पर आश्चर्यजनक प्रसन्नता हुई कि शंकर माहेश्वरीजी ने जो अनुवाद किया है वह केवल यही नहीं कि मूल का सही रूप है, बल्कि इतना खूबसूरत है, इतनी रवानी के साथ है कि उसे देख कर मूल का भ्रम होता है:

एक भाषा की कविता का अनुवाद दूसरी भाषा की कविता में करना बड़ा कठिन काम है : इसके लिए पहली बात तो यह है कि चिन्तन की दृष्टि से भी और काव्यानुभूति की दृष्टि से भी अनुवाद करने वाला कवि उस कवि के साथ, जिसका वह अनुवाद कर रहा है, एक भावनात्मक सादृश्य पैदा करे, और मैंने देखा कि शंकर माहेश्वरीजी ने हाफ़िज़ शीराजी के साथ ऐसा सादृश्य पैदा कर लिया है कि अनूदित शेर और हाफ़िज़ के मूल शेर को अलग-अलग खानों में नहीं रख सकते : यह जानते हुए भी कि हिन्दी का शेर फारसी के शेर का अनुवाद है, हमें इस तरह की आनन्दानुभूति होती है कि जैसे अनुवाद नहीं सुन रहे हों या पढ़ रहे हों। स्वतंत्र रचना का आस्वाद ले रहे हों। ख़्वाजा हाफ़िज़ का अनुवाद करते समय अनुवाद की कठिनाइयाँ इसलिए भी बढ़ जाती हैं कि हाफ़िज़ बहुत बड़े शाइर हैं। ईरान के चार बड़े कवियों में उनका नाम लिया जाता है अर्थात् रूमी, फ़िर्दौसी और सादी के साथ। यहाँ मुझे अल्लामा इकबाल का एक वाक्य याद आता है, और उस वाक्य का साहित्यिक महत्व और बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि इकबाल ने हाफ़िज़ के जीवन दर्शन की आलोचना की है। लेकिन हाफ़िज़ की शाइरी का जिक्र करते हुए वे कहते हैं कि जब मैं शेर कहने के मूड में होता हूँ तो मुझे महसूस होता है कि हाफ़िज़ की रूह मेरी रूह में शामिल हो गई है। यही बात मुझे शंकरजी के अनुवाद में नज़र आई है।

हाफ़िज़ की व्यापक दृष्टि और औदार्य काव्य जगत् में अपनी मिसाल आप हैं। हालांकि उनसे पहले सादी ने ग़ज़ल को बड़ी ऊंचाइयों तक पहुँचाया था, लेकिन ग़ज़ल में हाफ़िज़ सादी से कहीं आगे निकल गये थे। और ख़्वाजा किरमानी और जहीर फारियाबी की ग़ज़ल तो हाफ़िज़ की तुलना में कोई वैशिष्ट्य नहीं रखती। इसके बावजूद हाफ़िज़ इन सबका आदर करते हैं और एक शेर में कहते हैं-

सबसे पहले ग़ज़ल में उस्ताद सादी हैं
लेकिन हाफ़िज़ ग़ज़ल में ख़्वाजा किरमानी की पैरवी करता है।

इसी तरह एक और शेर का उर्दू तर्जुमा देखिए-

ख़्वाजा और सलमान के शेर का क्या कहना
(यानी उनका रुतबा तो बहुत बलन्द है)

हाँ, हाफ़िज़ के शेर जहीर फारियाबी से बेहतर हैं। हाफ़िज़ का यह मिजाज उनकी शायरी का एक हिस्सा है और इस मिजाज को समझे बिना हाफ़िज़ की शायरी का रसास्वादन बहुत मुश्किल है। माहेश्वरीजी का अनुवाद बताता है कि हाफ़िज़ के काव्य की बारीकियों पर नजर रखने के साथ ही साथ उनके मिजाज को भी उन्होंने समझा है।

ख्वाजा हाफ़िज़ के काव्य का तर्जुमा इसलिए भी मुश्किल है कि जब वे किसी दूसरे शायरों के किसी शेर से प्रभावित होते हैं तो उसके कथ्य अपने शेर में ऐसी ऊंचाई लिए अभिव्यक्त करते हैं कि वह शेर पहले शायर के शेर से बिल्कुल अलग हो जाता है। कहीं-कहीं इस शेर में वह बात भी झलकती है जो उस शायर के शेर में मौजूद होती है जिसके शेर से हाफ़िज़ प्रभावित होते हैं, लेकिन दूसरी बात जो हाफ़िज़ खुद पसंद करते हैं, वह बहुत गहरी और सूक्ष्म होती है। शेर में यह विशेषता सनअत-ए-ईहाम कहलाती है और इसमें कमाल हासिल करना हर शायर के वश का काम नहीं है। काव्यात्मक अनुवाद को इस स्तर पर पहुँचाना समय साध्य है। लेकिन शंकर माहेश्वरी के अनुवाद को गहरी दृष्टि से देखने पर पाठक इस नतीजे पर पहुंचता है कि शंकर माहेश्वरी ने यह मंजिल बड़ी कामयाबी से तय की है।

ओज हाफ़िज़ के शब्दों की एक अन्य विशेपता है-ख्वाजा हाफ़िज़ के इस काव्य वैशिष्ट्य का ज़िक्र करते हुए अल्लामा शिब्लीनोमानी लिखते हैं-हजारों गुणों के बावजूद फारसी शायरी में ओज का अभाव है। फ़िरदौसी और निजामी के यहाँ खास-खास मौकों पर पर्याप्त ओज है लेकिन वह उनके चरित्रों की विशेषता है, खुद शायर की प्रस्तुति नहीं है। इसके विपरीत ख्वाजा हाफ़िज के शब्द में जो भावना है, वह ख़ुद उन्हीं के जीवन की घटनाएं और उनकी संवेदना से जुड़ी हैं। इसलिए उनको वे इस ओज के साथ अभिव्यक्त करते हैं कि एक आलम छा जाता है।

माहेश्वरीजी के अनुवाद में ख्वाज़ा हाफ़िज़ का यह ओज जिस काव्यात्मक ढंग से आया है वह प्रशंसनीय है। इसी तरह ख्वाजा साहब की रिन्दी और मस्ती शंकर माहेश्वरी के तर्जुमे में छुप नहीं जाती बल्कि अपने पूरे सौंदर्य के साथ प्रकट होती है।

मैं इस तरह की मिसालें देकर शायरी और पाठक के बीच आना ठीक नहीं समझता बल्कि यह चाहता हूँ कि पाठक मेरे कथन से नहीं, खुद तर्जुमे से आनन्द उठायें। जो ज्ञान की वारुणी ख्वाजा हाफ़िज़ शीराजी ने शंकर माहेश्वरी के प्याले में ढाली है उससे बिना किसी बाधा के पाठक तृप्त हों।

प्रो. जगन्नाथ आजाद

विज्ञप्ति

आज से करीब बीस-इक्कीस साल पहले मेरे मित्र श्री रेवतीलाल शाह ने एक विचित्र प्रस्ताव रखा कि मैं फारसी भाषा के विख्यात कवि हाफ़िज़ की कुछ ग़ज़लों का अनुवाद करूँ। विचित्र इसलिए कि मैं फ़ारसी भाषा का अलिफ-बे भी नहीं जानता। हाफ़िज़ का नाम तो सुना था पर उसके काव्य का परिचय नहीं था।

रेवतीलालजी उत्साह में थे। उन्होंने मुझे एक-एक शब्द का अर्थ बताने का आश्वासन दिया। तथापि मेरा संकोच गहरा था। उनके आग्रह के कारण मैंने कहा कि एक रचना का अनुवाद कर देखता हूँ। तभी निर्णय कर सकूँगा। एक ग़ज़ल का काव्यानुवाद कर रेवतीलालजी को दिखाया। उन्हें जँच गया। तब पचास ग़ज़लों का रूपान्तर करना तय हुआ।

रेवतीलालजी ने एक-एक शब्द का अर्थ बताया, छन्दों के अर्थ भी। शब्दार्थ के सहारे मैं उन अर्थों पर विचार करता और मुझे कोई भिन्न या अतिरिक्त अर्थ सूझता तो उस पर परस्पर विचार कर लिया जाता। इस प्रकार कहा जा सकता है कि फारसी न जानते हुए भी यह मूल का भी रूपांतर है। पचास ग़ज़लों के रूपान्दर का लक्ष्य छः सात महीने में पूरा हो गया।

श्री रेवतीलालजी ने मूल का देवनागरी में लिप्यन्तर तथा प्रासंगिक शब्दों की टिप्पणियाँ भी लिख दी, जिससे पाठकों को सुविधा होगी।

केवल शब्दानुवाद के बजाय मैंने रचना की संवेदना के करीब रहने का प्रयास किया है। इसलिए इसे काव्यानुवाद कहना ज्यादा उचित लगा।

छन्दों में कुछ स्वतंत्रता बरती गई है। कहीं-कहीं अनावश्यक विस्तार से बचने के लिए एक ही रचना में छन्द परिवर्तन हुआ है। दो पंक्तियों वाले एक छन्द में एक मात्रा न्यूनाधिक है। हिन्दी कविता में एक ही क्रम में प्रयुक्त इस छन्द में किसी में एक मात्रा कम और किसी में एक मात्रा ज्यादा का प्रयोग हुआ है।

उदाहरण के लिए कामायनी और आशा सर्ग के लगातार दो छन्द इस प्रकार हैं:-

इन्द्रनील मणि महा चषक था सोम रहित उलटा लटका
आज पवन मृदु साँस ले रहा जैसे बीत गया खटका।

वह विराट था हेम घोलता नया रंग भरने को आज
कौन? हुआ यह प्रश्न अचानक और कुतूहल का था राज।

प्रथम छन्द में तीस और द्वितीय में इकतीस मात्राएं हैं। पंक्ति का अंतिम वर्ण दीर्घ होने पर तीस और ह्रस्व होने पर इकतीस मात्राएं होती हैं। इस छन्द की चाल ऐसी है कि इसकी गूँज बत्तीस मात्रा तक बनी रहती है। इसलिए एक मात्रा न्यूनाधिक होने पर भी संगीत की क्षति नहीं होती जो छन्दों का आवश्यक गुण है। इसी कारण मैंने एक ही छन्द की दो पंक्तियों में यह स्वतंत्रता ली है।

फारसी भाषा के विद्वान और उर्दू के मूर्धन्य कवि श्री जगन्नाथ आजाद का हृदय से आभारी हूँ कि उन्होंने पुस्तक की भूमिका लिखने की कृपा की।

इस समय मेरे मानस के सामने ललित निबन्धकार डॉ. कृष्ण बिहारी मिश्र, कवि श्री नवल, कथा लेखिका स्व. शारदा अग्रवाल तथा अनेक मित्र उपस्थित हैं जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से यह काम सुगम हो सका।

बीस बरस से जाड्यान्धकार में पड़े इस काव्यान्तर को प्रकाश पथ दिखलाने वाले मेरे शायर मित्र श्री चम्पालाल मोहता अनोखा के लिए मेरे मन में जो भाव है उसके लिए मेरा निवेदन है कि वे स्वयं उपयुक्त शब्द चुन कर मेरा भार कुछ हलका कर दें।

राष्ट्रीय-सामाजिक कार्य में उत्साह एवं समर्पण भाव से संलग्न श्री मुकुन्द राठी जिनकी आत्मीयता मुझे सदा सुलभ रही है, आज उन्हीं के प्रयास से यह प्रकाशन-कार्य संभव हो सका। अपने इन स्नेही बन्धुओं के प्रति आभार प्रकट कर इनकी भावना का मोल घटाना शोभनीय नहीं लगता। श्री संजय बिन्नाणी की मेरे प्रति आत्मीयता, बावजूद अतिव्यस्तता के, सदाबहार है। इस कार्य में उसका भरपूर सहयोग रहा है।

शंकर माहेश्वरी

1.

अलाया अय्य हस्साक़ी इदर कासन ब हमफ़िलहा
कि इ'श्क़ आसाँ नमूद अव्वल वले उफ़्ताद मुश्किलहा

ब बू-ए-नाफ़ः कि आख़िर सबा ज़ आँ तुर्रः बिकुशायद
ज़ ताब-ए-जा'द-ए-मुश्कीनश़ चि ख़ूँ उफ़्ताद दर दिलहा

ब मय सज्जादः रंगीं कुन गरत पी-ए-मुग़ां गोयद
कि सालिक बेख़बर न बुवद ज़ राह-ओ-रस्म-ए-मंज़िलहा

मरा दर मंज़िल-ए-जानाँ चि अम्न-ओ-ऐ'श चूँ हरदम
जरस फ़रियाद मीदारद कि बर बन्दीद मह्मिलहा

शब-ए-तारीक-ओ बीम-ए-मौज-ओ-गिर्दाबे चुनीं हाइल
कुजा दानन्द हाल-ए-मा सुबुक सारान-ए-साहिल हा

हमः कारम ज़ ख़ुदकामी बदनामी कशीद आख़िर
निहाँ के मानद आँ राज़े कज़ू साज़न्द मह्फ़िलहा

हुज़ूरी गर हमी ख़्वाही अज़ू ग़ायब मशव हाफ़िज़
मिता मा तलक़े मन तहवा दउल दुनिया ब अमहिलहा

1.

मुझको अब देती रह साक़ी मद के प्याले पर प्याले
वही प्रेम, जो सहज लगा था, विषम बन गया जीवन में।

हवा खोल देगी जब वेणी में उलझी मृगमद की गन्ध
उन घूँघर वाली अलकों से होगा लहू हृदय का स्तब्ध

मदिरा से रँग लो तुम आसन पीरेमुगाँ जो तुम्हें कहे
तौर तरीक़ों से मंज़िल के पथदर्शक अनभिज्ञ नहीं

प्रिय की इस पथ शाला में मुझको क्यों कर सुख शान्ति मिले
हरदम घंटी बज कर कहती जीन कसो तुम जीन कसो

ये भीषण लहरें, भँवरों के चक्कर और अँधेरी रात
वे क्या जानें हाल हमारा तट पर जो निश्चिन्त पड़े

कब तक छिप कर रह सकते हैं महफ़िल के गोपन आनन्द
अपयश के कारण बन बैठे स्वारथ के अपने सब काम

यदि तुम दर्शन चाहो हाफ़िज़ तो प्रिय से मत मुख मोड़ो
यदि तुम दर्शन पाओ तो विस्मृत कर जग से मुह मोड़ो

2.

अगर आँ तुर्क-ए-शीराज़ी बदस्त आरद दिल-ए-मारा
ब ख़ाल-ए-हिन्दवश बख़्शम समरक़न्द-ओ-बुख़ारा रा

बिदह साक़ी मय-ए-बाक़ी कि दर जन्नत न ख़्वाहीयाफ़्त
कनार-ए-आब-ए रुक्नाबाद व गुलगश्त-ए-मुसल्लारा

फ़ुग़ाँ कि ईं लूलियान-ए-शोख़ शीरींकार शह्र आशोब
चुनाँ बुर्दन्द सब्र अज़ दिल की तुर्कांख़्वान-ए-यग़मारा

ज़ इ'श्क़-ए-नातमाम-ए-मा जमाल-ए-यार मुस्तग़नीस्त
ब आब-ओ-रंग-ओ-ख़ाल-ओ-ख़त चि हाजत रू-ए-ज़ेबारा

मन अज़ आँ हुस्न-ए-रोज़ अफ़्ज़ूँ कि यूसुफ़ दाश्त दानस्तम
कि इ'श्क़ अज़ पर्द:-ए-इ'स्मत बैरूँ आवर्द ज़ुलेख़ा रा

हदीस अज़ मुतिब-ओ-मय गोई व राज़े दह्र कमतर जू
कि कस नकशूद-ओ-न कशायद बहिकमत ईं मुअ'म्मा रा

नसीहत गोश कुन जानाँ कि अज़ जाँ दोस्ततर दारंद
जवानान-ए-सआ'दतमन्द मन्द-ए-पीर-ए-दाना रा

बदम गुफ़्ती व खुर्सन्दम अफ़ाकुल्लाह नकू गुफ़्ती
जवाब-ए-तल्ख़ मी ज़ेबद लब-ए ला'ल-ए-शकर ख़ारा

ग़ज़ल गुफ़्ती ब दुर सुफ़्ती बिया-ओ-ख़ुश बि ख़्वाँ हाफ़िज़
कि बर नज़्म-ए-तू अफ़्शानद फ़लक उ'क़्द-ए-सुरय्यारा

2.

वह शीराज़ सुन्दरी मेरा हृदय थाम ले अपने हाथ
समरकन्द भी और बुखारा तो उसके तिल पर वारूँ।

रुक्नाबाद नहर का तट भी और मुसल्ला का कानन
तुझे स्वर्ग में नहीं मिलेंगे, साकी दे तू बची शराब।

मधुर अदाओं से वह नटखट सारा शहर दुर्ग में डाल
मन का सुख यों लूट ले गया, तुर्क यूथपति जैसे माल।

मेरा प्रेम अधूरा, उससे उस सुषमाकर का क्या काम
सुन्दर मुख को कहाँ जरूरत बाहर के उपकरणों की।

मुझे पता था, लख कर यूसुफ का दिन-प्रतिदिन बढ़ता रूप
सती जुलेखा को परदे के बाहर ले आयेगा प्रेम।

करो बात संगीत सुरा की, विश्व पहेली को छोड़ो
बुद्धि न सुलझा पाई इसको, और न सुलझा पायेगी।

प्रिये सुनो उपदेश ध्यान से प्राणों से भी प्रियतर जान
भाग्यवान युवजन सुनते हैं अनुभव परिपक्वों की बात।

तूने बुरा कहा, अच्छा है, खुश हूँ, ईश्वर क्षमा करे
मीठे लाल होंठ के कड़ुए उत्तर भी प्यारे लगते।

रची ग़ज़ल ज्यों मोती पोए अब इसको पढ़ दे स्वर से
हाफ़िज़ तेरी कृति पर देता व्योम कृत्तिका का उपहार।

3.

दोश अज़ मस्जिद सू-ए-मयख़ानः आमद पीर-ए-मा
चीस्त यारान-ए-तरीक़त बा'द अज़ीं तद्बीर-ए-मा

दर ख़राबात-ए-मुग़াँ मा नेज़ हम मंज़िल शवेम
कि ईं चुनीं रफ़्तस्त दर अ'हृद-ए-अज़ल तक़्दीर-मा

मा मुरीदाँ रू ब सू-ए-का'बः चूँ आरेम चूँ
रू ब सू-ए-खानः ए-खुम्मार दारद पीर-ए-मा

अ'क़्ल अगर दानद कि दिल दर बन्द-ए ज़ुल्फ़श चूँ ख़ुशस्त
आ'क़िलाँ दीवानः गर्दन्द अज़ पये-ज़ंजीर-ए-मा

रू-ए-ख़ूबत आयते अज़् लुत्फ़ बर मा कश्फ़ कर्द
ज़ आँ सबब जुज़ लुत्फ़-ओ-ख़ूबी नेस्त दर तफ़्सीर-ए-मा

तीर-ए-आह-ए-मा ज़ गर्दूं बिगुज़रद जान-ए-अ'ज़ीज़
रहम कुन बर जान-ए-ख़ुद परहेज़ कुन अज़ तीर-ए-मा

बर दर-ए-मयखानः ख्वाहम गश्त चूँ हाफ़िज़ मुक़ीम
चूँ ख़राबाता शुद अय यार-ए-तरीक़त पीर-ए-मा

3.

पीर हमारा मन्दिर से मधुशाला में आया कल रात
इससे बढ़ कर कहो शास्त्रियों, होगा कौन हमारा यत्न।

पीरे मुगाँ की मधुशाला में हम भी सहयात्री होवें
आदिकाल में हमलोगों को ऐसी ही तकदीर मिली।

क्योंकर बोलो करें शिष्य हम अपना मुख काबा की ओर
पीर हमारा किये हुए जब अपना मुख मधु-घर की ओर।

बुद्धि जान ले जो, हमको सुख उन अलकों की कारा में
तो पागल हो गिरें हमारी बेड़ी के पगतल मतिमान।

प्रिय के मुख ने खोल दिया है मुझ पर कृपा-मंत्र का अर्थ
अब आनन्द गान को तज कर कुछ भी नहीं हमारे पास।

कर जाते हैं पार व्योम को प्रिय, मेरी आहों के वाण
करो दया अपने प्राणों पर बचो हमारे तीरों से।

मैं भी कर लूँगा हाफ़िज़ सा मधुशाला का द्वार निवास
और शास्त्रघर हुआ पीर जब खुद ही मधु-घर का वासी।

4.

रौनक़-ए-अह्द-ए-शबाबस्त दिगर बुस्ताँरा
मी रसद मुज़्दः-ए-गुल बुलबुल-ए-ख़ुश इल्हाँ रा

अय सबा गर ब जवानान-ए-चमन बाज़ रसी
ख़िदमत-ए-मा बिरसाँ सर्व ओ गुल-ओ रीहाँ रा

तरसम आँ क़ौम कि बर दुर्दकशाँ मी खंदंद
दर सर-ए-कार-ए-ख़राबात कुनन्द ईमाँरा

यार-ए-मर्दान-ए-ख़ुदा बाश कि दर कश्ती-ए-नूह
हस्त ख़ाके कि ब आबे न ख़िर्द तूफ़ाँ रा

बिरौ अज ख़ानः-ए-गर्दूं बदर व नाँ मतलब
कीं' सियह कासः दर आख़िर बिकुशद मेह्माँ रा

गर चुनीं जल्वः कुनद मुग़बच्चः बादः फरोश
ख़ाकरोब-ए-दर-एमयख़ानः कुनम मिज़्गाँ रा

नशवी वाक़िफ़-ए-यक-नुक्तः ज़ अस्रार-ए-वजूद
गर तू सरगश्तः शवी दायरः-ए-इम्काँ रा

हरकरा ख़्वाबगह-ए-आख़िर बदो मुश्ते ख़ाकमस्त
गो चि हाजत कि बर अफ़लाक कशी ईवाँरा

दर सर-ए-ज़ुल्फ़ नदानम कि चि सौदादारी
कि बहम बरज़दः ए ग़ेसू-ए-मुश्क अफ्शाँ रा

मुल्क-ए-आज़ादगी व कुंज-ए-क़नाअ'त गंजेस्त
कि ब शम्शीर मयस्सर न शबद सुल्ताँ रा

हाफ़िज़ मय ख़ुर व रिन्दी कुन व ख़ुश बाश वले
दाम-ए-तज़्वीर मकुन चूं दिगराँ क़ुआँ रा

4.

बगिया में आ गई बहार, जगा पुष्प में नया उभार,
मधुकंठी बुलबुल तक पहुँची यौवन के आगम की बात।

उपवन के तरुणों के पास जो तुम जाओ अरी बतास,
तो उन तृण-तरु को गुलाब को मेरा नमस्कार कहना।

तलछट पीने वालों पर हँसते जो अवहेला कर
मधुशाला के धर्म कर्म से, डर है, वे न विचल जायें।

ईश जनों से करो मिताई क्योंकि नूह की नौका में
वह मिट्टी है, जो न समझती कुछ भी प्रलय प्रभंजन को।

रोटी की आशा मत रख, आकाश भवन से जल्दी भाग
यह खुदगरजी कर देता है मेहमानों का काम तमाम।

यदि किशोर वय मधु विक्रेता दिखलाये निज रूप प्रकाश
पलक-झाड़ुओं से बुहार दूँ तो मैं मधुशाला का द्वार।

केवल पंचभूत जगती तक जो तुम काटोगे चक्कर
तो अस्तित्व-रहस्य कभी भी जान नहीं तुम पाओगे।

स्वप्न जगत में जब हरेक को होना है दो मुट्ठी राख
तब क्यों लोग चिनाया करते महल गगन छूने वाले।

अहा, तुम्हारी जिन अलकों से उठती कस्तूरी की गन्ध
उन्हें सदा बिखराये रखना, कैसा है यह पागलपन।

स्वतंत्रता का राज्य और संतोष प्रान्त ऐसी निधि है
मिल सकती जो नहीं नृपतियों को उनकी तलवारों से।

हाफ़िज़ मधु का पान करो, मन मस्ती से सदा भरो
औरों जैसे तुम कुरान को मत प्रपंच में उलझाओ।

5.

सुलाह-ए-कार कुजा व मन ख़राब कुजा
बिबीं तफ़ावुत-ए-रह अज़ कुजास्त ता ब कुजा

चि निस्बतस्त बरिन्दी सुलाह-ओ-तक़्वा रा
सुमाअ्'-ए-वा'ज़ कुजा नग़्मः-ए-रबाब कुजा

दिलम ज़ सूमिआ' बिगिरफ़्त व ख़िर्क़ः-ए-सालूस
कुजास्त दैर-ए-मुग़ाँ व शराब-ए-नाब कुजा

बिशुद ज़ याद-ए-ख़ुशश याद-ए-रोज़गार-ए-विसाल
ख़ुद आँ करिश्मा कुजा रफ़्त व आँ इ'ताब कुजा

ज़ रू-ए-दोस्त दिल-ए-दुश्मनाँ चि दरयाबद
चिराग़-ए-मुर्दः कुजा शम्अ'-ए-आफ़ताब कुजा

बिबीं ब सेब-ए-जनख़दाँ कि चाह दर राहस्त
कुजा हमीरवी अय दिल बदीं शिताब कुजा

चू कुह्ल-ए-बीनश-ए-मा ख़ाक-ए-आस्तान-ए-शुमास्त
कुजा रवेम बिफ़र्मा अज़ीं जनाब कुजा

क़रार-ओ-ख़्वाब ज़ हाफ़िज़ तमअ'मदार अय दोस्त
क़रार चीस्त सबूरी कुदाम व ख़्वाब कुजा

5.

कहाँ पुण्य के कार्य और मैं कहाँ इधर मद पायी
देखो तो कितना अन्तर है इन दोनों राहों में।

पीने से क्या रिश्ता-नाता संयम और नियम का
कहाँ शुष्क उपदेश, कहाँ तो तंत्री की स्वर लहरी।

छल के चोगों से, मठ-मस्जिद से मन हुआ विरागी
मैं तो खोज रहा वह मन्दिर जहाँ वारुणी पावन।

उसकी स्मृति से चली गई वे मधुर मिलन की बातें
अब वे कहाँ कटाक्ष, कहाँ वे मानवती के ताने।

दुश्मन का दिल और मित्र के चेहरे में समता क्या
कहाँ बुझा वह दीप, कहाँ यह जगमग करता सूरज।

देख प्रिया की चिबुक सेव सी, जहाँ कूप गहरा है
कहाँ जा रहे हो यों ऐ दिल, इस पथ पर द्रुत गति से।

तेरी ड्योढ़ी की मिट्टी, मेरी आँखों का काजल
तब फिर यह दरबार छोड़ कर बता कहाँ मैं जाऊँ।

हाफ़िज़ से मत रखना प्यारे सुख-सपनों की आशा
यहाँ कहाँ का चैन, कहाँ विश्राम, कहाँ की निद्रा।

6.

सबा ब लुत़्फ़ बिगो आ ग़ज़ाल-ए-रा'ना रा
कि सर ब कोह-ओ-बियाबाँ तू दादः मा रा

ब शुक्र-ए-आँ कि तू ई बादशाह-ए-किश्वर-ए-हुस्न
ब याद आर ग़रीबान-ए-दश्त-ओ-सहरा रा

ग़रूर-ए-हुस्न इजाज़त मगर न दाद अय गुल
कि पुर्सिशे नकुनी अ'न्दलीब-ए-शैदा रा

ब हुस्न-ए-ख़ुल्क़ तवाँ कर्द सैद अह्ल-ए-नज़र
ब दाम-ओ-दानः नगीरन्द मुर्ग़-ए-दाना रा

चू बा हबीब नशीनी व बादः पैमाई
ब याद आर हरीफ़ान-ए-बादः पैमा रा

शक्कर फ़रोश कि उ'म्रश दराज़ बाद चिरा
तफ़क़्क़ुदे न कुनद तूती-ए-शक्कर ख़ारा

न दानम अज़ चि सबब रंग-ए-आशनाई नेस्त
सही क़दान-ए-सियह चश्म व माह सीमा रा

जुज़ ईं क़द्र न तवाँ गुफ़्त दर जमाल-ए-तू ऐब
कि ख़ाल-ए-मेह्र-ओ-वफ़ा नेस्त रू-ए-ज़ेबा रा

दर आस्माँ चि अ'जब गर ज़ गुफ़्तः-ए-हाफ़िज़
सुरूद-ए-ज़ुहः ब रक़्स आवर्द मसीहा रा

6.

अरी हवा, जा उस सुन्दर हिरणी से कह दे मेरी बात
'अरी मृगो, तूने सौंपा है मुझको वन-पर्वत के हाथ।'

अपनी विरुदावलि की खातिर रूप नगर के ऐ सम्राट
इस मरुवन वासी परदेसी की कुछ किया करो तुम याद।

रूप गर्व ऐसा जो शायद अनुमति देता नहीं तुम्हें
इसीलिए ऐ कुसुम, न लेते खबर बावरी बुलबुल की।

शिष्ट आचरण करे भले ही भ्रमित, ज्ञानियों के मन को,
दाने के लालच में फँसते नहीं जाल में विहग सुजान।

जब तुम संग रहो प्रियतम के और करो मदिरा का पान
अपने प्रतिद्वंद्वी पियक्कड़ों की तब किया करो तुम याद।

ईश कृपा से मिले दीर्घ जीवन मधु के सौदागर को
जिसने खबर नहीं ली शुक की जो सच्चा मधु का गाहक।

कजरारी आंखें हैं जिनकी, ललित देह, मुख चन्द्र समान
पता नहीं किस कारण उनमें सहृदयता का रंग नहीं।

तेरे मुख की सुषमा ऐसी, कुछ भी कसर नहीं दिखती
सिर्फ एक कोमल करुणा की वहाँ न दिखती छाप कहीं।

आसमान में जब शुक तारा गाये हाफ़िज़ की ग़ज़लें
नाच उठे जिनको सुन ईसा तो इसमें क्या विस्मय है।

7.

अय हुदहुद-ए-सबा ब सबा मीफ़िरिस्तमत
बिनिगर कि अज़ कुजा ब कुजा मीफ़िरिस्तमत

है.फ़स्त ताइरे चू तू दर ख़ाकदान-ए-दह्र
ज़ ईंजा बाशियान-ए-वफ़ा मीफ़िरिस्तमस्त

दर राह-ए-इ'श्क़ मर्हलः-ए-क़ुर्ब-ओ-बुअ्दनेस्त
मी बीनमत अयाँ व दुआ' मीफ़िरिस्तमत

हर सुब्ह-ओ-शाम क़ाफ़िलः अज़ दुआ'-ए-ख़ैर
दर सुह्बत-ए-शुमाल-ओ-सबा मीफ़िरिस्तमत

दर रू-ए-ख़ुद तफ़र्रुज-ए-सन्अ-ए-ख़ुदा बिकुन
कि आइना-ए-ख़ुदा-ए-नुमा मी फ़िरिस्तमत

ता लश्कर-ए-ग़मत नकुनद मुल्क-ए-दिल ख़राब
जान-ए-अ'ज़ीज़-ए-ख़ुद ब नवा मीफ़िरिस्तमत

हर दम ग़मे फ़िरस्त मरा व बिगो ब नाज़
कि ईं तुह्फ़ः अज़ बराए ख़ुदा मीफ़िरिस्तमत

अय ग़ायब अज़ नज़र कि शुदी हमनशीन-ए-दिल
मी गोयमत दुआ' व सना मीफरिस्ततम

ता मुत्रिबाँ ज़ शौक़-ए-मनत आगही दहन्द
क़ौल-ओ-ग़ज़ल ब साज़-ओ-नवा मीफ़िरिस्तमत

साक़ी बिया कि हातिफ़-ए-ग़ैबम ब मुज़्दः गुफ़्त
बा दर्द सब्र कुन व दवा मीफ़िरिस्तमत

हाफ़िज़ सुरूद-ए-मजलिस-ए-मा ज़िक्र-ए-ख़ैर-ए-तुस्त
बि शिताब हाँ कि अस्प-ओ-क़बा मीफ़िरिस्तमत

7.

ऐ हुदहुदे विहग मैं तुझको भेज रहा हूँ सबा प्रदेश
वहाँ प्रिया रहती है मेरी पथ का रखना ध्यान विशेष।

अरे विहग इस चंचल जग में अत्याचार घनेरा है
जहाँ वफ़ा का नीड़ बसा है भेजूँ मैं तुझको उस देश।

अजब प्रेम की राह, वहाँ पर दूरी क्या नजदीकी क्या
मुझको तो तू ही तू दिखता वारूँ तुझ पर शुभ संदेश।

हवा संग उत्तर-पूरब की, नित्य प्रात औ' सन्ध्या को
तेरे निकट भेजता हूँ मैं आत्मा के आशीष अशेष।

अपने चेहरे में देखो उस स्रष्टा का रचना कौशल
इसीलिए मैं भेज रहा हूँ तुझको वह दर्पण सविशेष।

यही समझ कर भेज रहा मैं तुझको अपने प्यारे प्राण
उजड़ न जाये दुःख-दलों से तेरे मृदु मानस का देश।

व्यथा भेजता रह तू मुझको और सदा यों कहता रह
यह उपहार ख़ुदा के खातिर पास तुम्हारे भेज रहा।

दूर नजर से रहता फिर भी दिल में किया बसेरा है
मुद-मंगल की दुआ-प्रार्थना पास तुम्हारे भेज रहा।

मेरे मन की अभिलाषाएँ गायक तुम तक पहुंचायें
इसीलिए ये गीत, साज, स्वर पास तुम्हारे भेज रहा।

साक़ी आ, अब देवदूत ने मुझको यह पैगाम दिया
दर्द सहन करने की औषधि पास तुम्हारे भेज रहा।

मजलिस में सब करते रहते तेरी ही बातें हाफ़िज़
जल्दी कर ये अश्व-वस्त्र मैं पास तुम्हारे भेज रहा।

8.

बिया कि क़स्र-ए-अ'मल सख़्त सुस्त बुनियादस्त
बियार बादः कि बुनियाद-ए-उ'म्र बर बादस्त

ग़ुलाम-ए-हिम्मत-ए-आनम कि ज़ेर-ए-चर्ख़-ए-क़बूद
ज़ हर चि रंग-ए-तआ'लुक़ पज़ीरद आज़ादस्त

गोयमत कि बमयख़ानः दोश मस्त-ओ-ख़राब
सुरोश-ए-आ'लम-ए-ग़ैबम चि मुज़्दःहा दादस्त

कि अय बलन्द नज़र शाहबाज़-ए-सिद्रः नशीं
नशेमन-ए-तू न ईं कुंज-ए-मेहनताबादस्त

तुरा ज़ कुंग्रा-ए-अ'र्श मी ज़नन्द सफ़ीर
नदानमत किं दरीं दामगाह चि उफ़्तादस्त

नसीहते कुनमत यादगीर व दर अ'मल आर
कि ईं हदीसे ज़ पीर-ए तरीक़तम यादस्त

रिज़ा बदादः बिदह व ज़ जबीं गिरह बिकुशाई
कि बर मन-ओ-तू दर-ए-इख़्तियार न कुशादस्त

ग़म-ए-जहाँ मख़ुर व पन्द-ए-मन मबर अज़ याद
कि ईं लतीफ़ः-ए-इ'श्क़म ज़ रहरवे यादस्त

मजौ दुरुस्ती-ए-अ'ह्द अज़ जहान-ए-सुस्त निहाद
कि ईं अ'जूज़ः अ'रूस-ए-हज़ार दामादस्त

निशान-ए-अ'हद-ओ-वफ़ा नेस्त दर तबस्सुम-ए-गुल
बिनाल बुलबुल-ए-बेदिल कि जा-ए-फ़रियादस्त

हसद चि मीबरी अय सुस्त नज़्म बर हाफ़िज़
क़बूल-ए-ख़ातिर व लुत्फ़-ए-सुख़न ख़ुदा दादस्त

8.

अभिलाषा की नींव रेत पर, आ तू मुझ तक जल्दी आ,
जीवन का आधार हवा पर, ला, झट मुझको मदिरा दे।

नील गगन के नीचे जो उलझे ममता की माया में
उनसे मुक्त हुए जो, उनके साहस का मैं सदा गुलाम।

कल जब मैं मद में विभोर था रजनी में मधुशाला में
देवदूत ने दिया संदेशा कैसे उसे बताऊँ मैं।

ऊंचे स्वर्ग लोक के वासी दिव्य दृष्टि वाले ऐ बाज
कर्मलोक का कोई कोना तुझ शाही का नीड़ नहीं।

नभ के कंगूरे से आकर एक रहस्यमयी आवाज
कहती है, जाने क्यों तेरा बन्दी गृह में हुआ पड़ाव।

एक तत्वज्ञानी ने मुझको कही बात जो याद मुझे
वही सीख मैं तुझको देता उसे याद रख अमल करो।

मन का क्षोभ मिटा कर जो कुछ मिला उसे स्वीकार करो
नहीं खुला हम तुम जैसों के लिए द्वार अधिकारों का।

लोक रीति से दुखी न हो तू, मेरी कही बात मत भूल
मुझे याद है एक पथिक की प्रेम मर्मवाली यह बात।

इस दुर्बल दुनिया से मत कर वचन पालने की आशा
यह बुढ़िया रह चुकी अभी तक अनगिन लोगों की बीवी।

यह जो है मुस्कान फूल में, नहीं वफा का वहाँ निशान,
आहें भर दिलभग्ना बुलबुल, यह दुखड़ा रोने का ठाँव।

ऐ निष्प्रभ पद रचने वाले हाफ़िज़ से क्यों करते डाह?
मन की मौज, काव्य का रस तो ईश कृपा से मिलता है।

9.

बुलबुले बर्ग-ए-गुले ख़ुश रंग दर मिन्क़ार दाश्त
वन्दरा बर्ग-ओ-नवा ख़ुश नाल हा-ए-ज़ार दाश्त

गुफ़्तमश दर ऐ'न-ए-फ़स्ल ई नालः-ओ-फ़रियाद चीस्त
गुफ़्त मारा जल्वः-ए-मा'शूक़ दरीं कार दाश्त

यार अगर न निशस्त बा मा चीस्त जा-ए-ए'तराज़
बादशाह-ए-कामरॉं बूद अज़ गदायाँ आ'र दाश्त

आरिफ़े कू सैर कर्द अन्दर मक़ाम-ए-नेस्ती
मस्त शुद चूँ मस्ती अज़ आ'लम-ए-असार दाश्त

दर नमी गीरद नियाज़-ओ-इज्ज़-ए-मा बा हुस्न-ए-दोस्त
ख़ुर्रम आँ कज़ नाज़नीनाँ बख़्त-बरख़ुरदार दाश्त

ख़ेज़ ता बर किल्क-ए-आँ नक़्क़ाश जाँ अफ़शाँ कुनेम
कीं हमः नक़्श-ए-अ'जब दर गर्दिश-ए-परकार दाश्त

गर मुरीद-ए-राह-ए-इ'श्क़ी फ़िक्र-ए-बदनामी मकुन
शैख़-ए-सनआँ ख़िर्क़ः रेहन ख़ानः-ए-ख़ुम्मार दाश्त

वक़्त-ए-आँ शीरीं क़लन्दर ख़ुश कि दर अत्वार-ए-सैर
ज़िक्र-ए-तस्बीह-ए-मलक दर हल्क़ः-ए-ज़ुन्नार दाश्त

चश्म-ए-हाफ़िज़ ज़ेर-ए-बाम-ए-क़स्र-ए-आँ हूरी शिरश्त
शेवः-ए-जन्नात-ए-तज्री तहतहा-उल अन्हार दाश्त

9.

हेम वर्ण पाँखुरी फूल की लिये चोंच में बुलबुल एक
पँखुरी भीतर, और रुदन में प्रकट विरह का हाहाकार।

इस वसन्त ऋतु में तू यह क्या करती है रोदन-फरियाद
उसने कहा, मुझे प्रिय की सुंदरता ने सौंपा यह भार।

प्रियतम मेरे पास न बैठा तो इसमें है क्या एतराज
लजा गया भिक्षुक से देखो, है जो सफलकाम सम्राट।

चक्कर काट चुका जब ज्ञानी इस मायावी दुनिया का
तब लवलीन हो गया वह पाकर रहस्य जग की मस्ती।

प्रिय के रूप-गर्व पर मेरे विनय-दैन्य का असर नहीं
हैं प्रसन्न वे, सुन्दरियों के प्रति प्रसन्न है जिनका भाग्य।

उठ तू, प्राण निछावर कर उस चितकार की तूली पर
वर्तुल गति में आँक दिया है जिसने ऐसा चित्त-विचित्त।

प्रेम पंथ का पथिक अगर तू तो मत डर बदनामी से
शेख सनाअ रख गए बन्धक चोले को मधुशाला में।

उस सुकुमार सन्त का वह पर्यटन काल क्या सुंदर था
घिरा जनेऊ में भी वह सुरमाला की बातें करता।

वह सुन्दरी परी सी जिसके महल तले की नहरों में
जल तरंग स्वर्गीय भरेंगी हाफ़िज़ की गीली आँखें।

10.

रौशन अज़ पर्तौ-ए-रूयत नज़रे-नेस्त कि नेस्त
मिन्नत-ए-ख़ाक-ए-दरत बर बसरे नेस्त कि नेस्त

नाज़िर-ए-रू-ए-तू साहिब-ए-नज़रानन्द वले
सर-ए-गेसू-ए-तू दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त

अश्क-ए-ग़म्माज़-ए-मन अर सुर्ख़ बरामद चि अ'जब
ख़जल अज़ कर्दः-ए-ख़ुद पर्दः दरे नेस्त कि नेस्त

ता ब दामन ननशीनद ज़ नसीमत गर्दे
सैल-ए-अश्क अज़ नज़रम बर गुज़रे नेस्त कि नेस्त

तू ख़ुद अय शोल:-ए-रख़्शन्दः चि दारी दर सर
कि कबाब अज़ हरकातत जिगरे नेस्त कि नेस्त

मस्लिहत नेस्त कि अज़ पर्दः बैरूँ उफ़्तद राज़
वर्नः दर मज्लिस-ए-रिन्दाँ ख़बरे नेस्त कि नेस्त

बजुज़ईं नुक्तः कि हाफ़िज़ ज़ तू नाख़ुशनूदस्त
दर सरापा-ए-वजूदत हुनरे नेस्त कि नेस्त

10.

ऐसी कोई दृष्टि नहीं, जो नहीं व्यक्त तेरे प्रतिबिम्ब
तेरी द्वार धूलि का न हो अनुग्रह, ऐसी आँख नहीं।

तेरे मुख का दर्शन तो वे करते हैं जो प्रज्ञाचक्षु
पर कोई मन नहीं, नहीं जिसको तेरी अलकों का ध्यान।

मेरे चुगलखोर आँसू जो लाल हुए तो क्या आश्चर्य
भेद खोल दे और न लज्जित हो, ऐसा कोई न यहाँ।

तेरा आँचल धूल धूसरित न हो हवा के झोंकों से
अतः न कोई पन्थ, जहाँ मेरे आँसू की बाढ़ नहीं।

अरी अग्नि की शिखा, तुम्हारे मन की कैसी कथा बता,
कोई जिगर नहीं जो उससे भुन कर बना कबाब नहीं।

परदे के बाहर रहस्य को किया जाय, यह उचित नहीं
वरना कोई खबर नहीं, जो न हो माधवी मजलिस में।

प्रेम पन्थ की यात्रा करना है निषिद्ध सुकुमारों को
क्योंकि विपद क्या नहीं, नहीं जो पग-पग पर इस रस्ते में

ऐसी कोई कला नहीं, जो नहीं तुम्हारी सत्ता को-
पूरनिमा में, सिर्फ एक बस हाफ़िज़ तुम से है नाराज।

11.

ज़ुल्फ़ आशुफ़्तः व ख़ी कर्दा व ख़ंदाँ लब व मस्त
पैरहन चाक व ग़ज़ल ख़्वाँ व सुराही दर दस्त

नर्गिसश अर्बदःख़ो व लबश अफ़सोस कुनाँ
नीमशबदोश ब बालीन-ए-मन आमद बि निशस्त

सर फ़रागोश-ए-मन आवर्द व बआवाज़-ए-हज़ीं
गुफ़्त कि अय आ'शिक़-ए-शोरिदः-ए-मन ख़्वाबत हस्त

आ'शिक़े रा कि चुनीं बादः-ए-शबगीर दहन्द
काफ़िर-ए-इ'श्क़ बूद गर नबूद बादः परस्त

बिरौ अय ज़ाहिद व बर दुर्दकशाँ ख़ुर्दा मगीर
कि नदानन्द जुज़ीं तुह्फ़ा बमा रोज़-ए-अलस्त

आँचि ऊ रेख़्त ब पैमानः-ए-मा नोशीदेम
अगर अज़ ख़ुमर-ए-बिहिश्तस्त वर अज़ बादः-ए-मस्त

ख़ंदः-ए-जाम-ए-मय व ज़ुल्फ़-ए-गिरहगीर-ए-निगार
अय बसा तौबः कि चूँ तौबः-ए-हाफ़िज़ बिशिकस्त

11.

बिखरी लटें, श्वेदकण झलमल, हँसी होंठ पर मतवाली
लिये हाथ मद भरी सुराही, लटपट वेश, गीत मुख में।

वे ललकार भरे मादक दृग और अधर में व्याकुल भाव
मेरे सिरहाने आकर वह बैठ गई कल आधी रात।

दर्द भरे स्वर में यों बोली कानों तक लाकर मुंह को
ऐ मेरे पगले प्रेमी, क्यों पड़े हुए हो यों चुपचाप?

प्रिय को यों दी जाये मदिरा जो कर दे मतवाली रात
उसको जो न झपट कर पी ले प्रेम धर्म का वह काफिर।

चल हट पूजक, दोष न दे तू तलछट पीने वालों को
जिस दिन भाग्य बँटा था, इनके हक़ कुछ और नहीं आया।

हम तो पी लेते हैं, जो भी प्याले में वह भर देता
चाहे वह स्वर्गीय सोम हो या फिर मस्ती की हाला।

प्याले की स्मिति और प्रिया की उलझन वाली अलकों ने
मिटा दिये सारे पछतावे ज्यों हाफ़िज़ के पश्चाताप।

12.

शिगुफ़्तः शुद गुल-ए-हम्रा व गश्त बुलबुल मस्त
सदा-ए-सरखुशी अय आ'शिक़ान-ए-बादः परस्त

असास-ए-तौबः कि दर मुहकमी चूँ संग नमूद
बिबीं कि जाम-ए-ज़जाजी चिगूनः अश बिशिकस्त

ब बाल-ओ-पर मरौ अज़ रह कि तीर-ए-पुरताबे
हवा गिरफ़्त ज़माने वले बख़ाक निशस्त

अज़ीं रबात-ए-दोदर चूँ ज़रूरतस्त रहील
रवाक़-ए-ताक़-ए-मई'शत चि सरबलन्द व चि पस्त

ब हस्त-ओ-नेस्त मरंजाँ ज़मीर व खुश मीबाश
कि नेस्त हस्त सरंजाम-ए-हर कमाल कि हस्त

शिकोह-ए-आसिफ़ी व अस्प-ए-बाद व मंतक़-ए-तय्यर
ब बाद रफ़्त व अज़ाँ ख़्वाजः हेच तरफ़ न बस्त

बियार बादः कि दर बारगाह-ए-इस्तग्ना
चि पासबाँ व चि सुल्ताँ चि हुशियार व चि मस्त

ज़बान-ए-किल्क-ए-तू हाफ़िज़ चि शुक्र-ए-आँ गोयद
कि तुह्फ़ः-ए-सुख़नश मी बुरन्द दस्त ब दस्त

12.

लाल फूल खिल गये, बुलबुलों में आई आनन्द हिलोर
मदिरा के साधक प्रेमी जन गाओ खुशियों के गाने।

पत्थर सी जो नींव कठिन थी सद्-आचरण प्रतिज्ञा की
क्या कमाल है, उसे तोड़ डाला शीशे के प्याले ने।

पंखों के बल पर इतरा कर छोड़ न देना अपनी राह
सिर्फ जोश का तीर तनिक फर फर कर रज में मिल जाता।

इस दो द्वारों की पथशाला से जब सबको जाना है
तब क्या धरा कि जीवन मण्डप ऊँचा हो या नीचा हो।

'है' या 'नहीं' सोच कर मन को दुखी न कर खुश रह जग में
जितने भी कौशल हैं उनका अन्त 'नहीं' में होना है।

वह आसिफ का तेज, पवन का अश्व, पक्षियों से बातें
सभी हो गये लीन हवा में, नृप को कुछ भी नहीं मिला।

यह दरबार उपेक्षाओं का, यहाँ नृपति क्या, प्रहरी क्या,
बुद्धिमान हो या रसज्ञ हो सबको तू बस मदिरा दे।

झट ले लेते हैं जो हाफ़िज़, जिसकी कविता का उपहार,
वही कलम की वाणी तेरी क्या उनका लेगी आभार।

13.

सबा अगर गुज़रे उफ़्तदत ब किश्वर-ए-दोस्त
बियार नफ़ाहः-ए-अज़ गेसू-ए-मुअम्बर-ए-दोस्त

ब जान-ए-ऊ कि बशुक्रानः जाँ बर अफ़्शानम्
अगर ब सू-ए-मन आरी पयामे अज़ बर-ए-दोस्त

व गर चुनाँचि दराँ हज़रतत नवाशद बार
बराए दीदः बिआवर ग़ुबारे अज़ दर-ए-दोस्त

मन गदा व तमन्ना-ए-वस्ल-ए-ऊ हैहात
मगर बख़्वाब बिबीनम जमाल-ओ-मंज़रे-दोस्त

दिल-ए-सनोबरेम हमचू बंद लर्ज़ानस्त
ज़ हस्रत-ए-क़द-ओ-बाला-एचूँ-सनोवर-ए-दोस्त

अगरचः दोस्त ब चीज़ो नमी ख़िरद मारा
ब आ'लमे न फ़रोशेम मू-ए-अज़ सर-ए-दोस्त

चि बाशद अर शवद अज़ क़ैद-ए-ग़म दिलश आज़ाद
चू हस्त हाफ़िज़-ए-मिस्कीं ग़ुलाम-ओ-चाकर-ए-दोस्त

13.

अरी हवा जो जाओ होकर मेरे प्राण सखा के देश
उसके अम्बरवासित केशों की सुगन्ध तो ले आना।

अगर अनुग्रह करके मुझ तक ला दोगी उसका सन्देश
तो इस कारण, शपथ बन्धु की प्राण छिड़क दूँगा अपने।

अगर मीत की राज सभा के भीतर तुम न पहुँच पाओ
तो इन आँखों के अंजन को द्वार धूलि ही ले आना।

हूँ भिखमंगा, पर उससे मिलने की इच्छा, क्या कहना!
स्वप्न लोक में पाऊँ शायद प्राण सखा की रूप झलक।

चीड़ समान मीत के तन को पाने की अभिलाषा में
मेरा हृदय सनोबर देखो काँप रहा है बेंत समान।

किसी वस्तु के तुल्य न समझे बन्धु भले ही मेरा मूल्य
उसका एक केश भी दूँगा नहीं विश्व भर के बदले।

क्या होगा यदि दुख-कारा से हो ले मुक्त हृदय उसका
जबकि दीन हाफ़िज़ मितवा का बिना दाम का चाकर है।

14.

सुब्हदम मुर्ग़-ए-चमन बा गुल-ए-नौ ख़ास्तः गुफ़्त
नाज़ कम कुन कि दरीं बाग़ बसे चूँ तू शिगुफ़्त

गुल बिखंदीद कि अज़ रास्त न रंजेम वले
हेच आ'शिक सुख़न-ए-तल्ख़ ब मा'शूक न गुफ़्त

गर तम्अ' दारी अज़ आँ जाम-ए-मुरस्सा मय-ए-ला'ल
दुर्र-ओ याक़ूत ब नोक-ए-मिज़्ाअत बायद सुफ़्त

दर गुलिस्तान-ए-इरम दोश चू अज़ लुत्फ़-ए-हवा
ज़ुल्फ़-ए-सम्बुल ज़ नसीम-ए-सहरी मी आशुफ़्त

गुफ़्तम अय मसनद-ए-जम जाम-ए-जहाँ बीनत कू
गुफ़्त अफ़सोस कि आँ दौलत-ए-बेदार बिख़ुफ़्त

सुख़न-ए-इ'श्क़ न आनस्त कि आयद बज़ुबाँ
साक़िया मय दह व कोताह कुन ईं गुफ़्त-ओ-शनुफ़्त

अश्क-ए-हाफ़िज़ ख़िरद-ओ-सब्र ब दरिया अन्दाख़्त
चि कुनद सोज़-ए-ग़म-ए-इ'श्क़ न आरस्त निहुफ़्त

14.

अभी खिला जो फूल बाग में, बुलबुल यों बोली उससे,
इतना मत इतरा, तुम जैसे यहाँ अनेकों फूल खिले।

हँस कर बोला फूल कि सच का दुःख नहीं हमको लेकिन
ऐसी कड़वी बात प्रिया ने कभी किसी प्रिय को न कही।

अगर जड़ाऊ प्याले में तू चाहे अरुणासव पीना
तुझे पिरोने होंगे मानिक मुक्ता अपनी पलकों से।

पिछली रात इरम कानन में हुई पवन की जो क्रीड़ा
वही सुबह के झोंको से सहलाती सम्बुल की अलकें।

'ऐ जम के आसन, वह तेरा कहाँ विश्वदर्शी प्याला?'
'वह जाग्रत-ऐश्वर्य खो गया', बोला वह सखेद मुझसे।-

वाणी जिसको कहती फिरती वह तो नहीं प्रेम की बात,
कहना सुनना सीमित कर तू साक़ी मुझको मदिरा दे।

रख न सका मन में सँवार कर प्रेम वेदना की ज्वाला
हाफ़िज़ ने तब धैर्य बुद्धि को अश्रु जलधि में बहा दिया।

15.

गुल दर बर व मय दर कफ़ व मा'शूक़ बकामस्त
सुल्तान-ए-जहानम व चुनीं रोज़ ग़ुलामस्त

गो शम्अ' मयारद दरीं बज़्म कि इम्शब
दर मजलिस-ए-मा माह-ए-रुख़-ए दोस्त तमामस्त

दर मज़हब-ए-मा बाद: हलालस्त व लेकिन
बे रुख़-ए-तू अय सर्व-ए-गुल अंदाम हरामस्त

गोशम हम: बर क़ौल-ए-नै व नग़म:-ए-चंग अस्त
चश्मम हम: बर ला'ल-ए-लब-ओ-गर्दिश-ए-जामस्त

दर मजलिस-ए-मा इत्र मयामेज़ कि जाँ रा
हर लहज: गेसू-ए-तू ख़ुशबू-ए-मशामस्त

अज़ चाश्नी-ए-क़न्द मगो हेच वज़ शक्कर
ज़आँ रौ कि मरा बा लब-ए-शीरीन-ए-तू कामस्त

अज़ नंगे चि गोई कि मरा नाम ज़ नंगस्त
वज़ नाम चि पुर्सी कि मरा नंग ज़ नामस्त

मयख़्वार: व सरगश्त: व रिन्देम व नज़रबाज़
वा कस कि चू मा नेस्त दरीं शह्र कुदामस्त

बा मुह्तसिबम ऐ'ब मगोयद कि ऊ नेज़
पैवस्त: चू मा दर तलब-ए-ऐ'श-ए-मुदामस्त

ता गंज-ए-ग़मत दर दिल-ए-वीराना मुक़ीमस्त
पैवस्त: मरा कुंज-ए-ख़राबात मक़ामस्त

हाफ़िज़ मनशीं बे मय-ओ-मा'शूक़: ज़माने
कि अय्याम-ए-गुल-ओ-यासमन व ई'द-ए-सियामस्त

15.

जब फूलों का हार गले में, हाथों में मधु का प्याला,
मनवांछित प्रेयसी पास हो तो भूपति भी मेरा दास।

आज घोषणा करो कि कोई दीप न लाये महफिल में
प्रिय के पूर्ण चन्द्र मुख की छवि आज यहाँ पर छाई है।

मदिरा पीना विधि सम्मत है मेरे मजहब में लेकिन
तेरे बिना अधर्म वही बन जाता है ऐ गुल-वदनी।

मुरली की धुन और मृदंगम की ध्वनि को सुनते हैं कान
मँडराती प्याली, अधरों की लाली पर अटकी है आँख।

आज हमारी इस मजलिस में इत्र छिड़कने का क्या काम
तेरे केशों की सुगन्ध से गमक रहे हैं मेरे प्राण।

चीनी और चासनी की बातों में क्या है धरा कहो
मेरा तो उद्देश्य, तुम्हारी अधर माधुरी को पाना।

अपमानों की क्या कहते हो, यही ख्याति के कारण हैं
और ख्याति का भी क्या कहना, उससे मैं अपमानित हूँ।

मैं तो मद्यप हूँ, सनकी हूँ, आँख लड़ाने वाला हूँ
लेकिन ऐसा कौन शहर में जो मुझ जैसा नहीं यहाँ।

धर्मादेशक के सम्मुख तुम करो न हम पर दोषारोप
वे भी तो हम जैसे, देखो खोज रहे हैं परमानन्द।

इस एकान्त हृदय में जब से हुआ दुःखनिधियों का वास
तब से मधुशाला का प्रान्तर बना हुआ मेरा आवास।

समय गुलाब चमेली का है, आई है रोजों की ईद
ऐसे में तू मत रह हाफ़िज़ बिना प्रिया के, आसव के।

16.

दोश दीदम कि मलाइक दर-ए-मयख़ान: ज़दन्द
गिल-ए-आदम बि सिरिश्तंद व ब पैमान: ज़दन्द

साकिनान-ए-हरम-ए-सिर्र-ए-अफ़ाफ़-ए-मलकूत
बा मन-ए-राहनशीं बाद:-ए मस्तान: ज़दन्द

आसमान बार-ए-अमानत न तवानस्त कशीद
क़ुर'-ए-फ़ाल बनाम-ए-मन-ए-दीवान: ज़दन्द

मा बसद ख़िर्मन-ए-पिन्दार ज़ रह चूँ न रवेम
चूँ रह-ए-आदम-ए-ख़ाकी बयक दान: ज़दन्द

आतिश आँ नेस्त कि बर शो'ल:-ए-ऊ ख़ंदद शम्अ'
आतिश आनस्त कि दर ख़िर्मन-ए-पर्वान: ज़दन्द

जंग-ए-हफ़्ताद-ओ-दो व मिल्लत हम: रा उज्र बिनह
चूँ नदीदन्द हक़ीक़त रह-ए-अफ़सान: ज़दन्द

शुक्र-ए-एज़द कि मियान-ए-मन-ओ-ऊ सुलह फ़्ताद
हूरियाँ रक़्सकुनाँ सागर-ए-शुक्रान: ज़दन्द

कसचू हाफ़िज़ नकशीद अज़ रुख़-ए-अंदेशा नक़ाब
ता सर-ए-ज़ुल्फ़-ए-अ'रूसान-ए-सुख़न शान: ज़दन्द

16.

मधुशाला में दस्तक देकर पिछली रात फरिश्तों ने
आदम की मिट्टी को मथ कर बना दिया रस का प्याला।

उस रहस्यमय देवलोक के महलों के बाशिन्दों ने
मुझ जैसे पथवासी जन को दिया मस्त मद का प्याला।

आसमान भी झेल न पाया बोझ, प्रेम की थाती का
पासा जब फेंका तो उसमें मुझ पगले का भाग्य जगा।

एक अन्न के दाने पर जब फिसल गए आदम के पैर
दंभों के खलिहान बीच रह कर हम क्यों न भटक जायें।

जिसकी लौ पर इतराता है दीपक, वह तो आग नहीं
आग वही है जो पतंग के अन्तस्तल में जलती है।

सत्तर पर दो और बहत्तर जाति पाँति के झगड़े हैं,
और करें क्या, दूर सत्य से और रूढ़ि के जकड़े हैं।

सुलह हो गई मुझमें उसमें, धन्यवाद है ईश्वर का
इसी खुशी में मदिरा पीकर लगी नाचने अप्सरियाँ।

काव्य-सुन्दरी लगी सँवरने जिस दिन से इस जगती में
हाफ़िज़ जैसा उठा न पाया कोई भी घूंघट उसका।

17.

दमे बा ग़म बसर बुर्दन जहाँ यकसर नमी अर्ज़द
ब मय बिफ़रोश दिलक़-ए-मा कज़ीं बेहतर नमी अर्ज़द

ब कू-ए-मयफ़रोशानश ब जामे बर नमीगीरंद
ज़हे सज्जाद:-ए-तक़्वा कि यक साग़र नमी अर्ज़द

शकोह-ए-ताज-ए-सुल्तानी कि बीम-ए-जाँ दरू दर्ज अस्त
कुलाहे दिलकशस्त अमा बदर्द-ए-सर नमी अर्ज़द

रक़ीबम सर ज़नशहा कर्द कज़ ईं बाब सर बरताब
चि उफ़्ताद ईं सर-ए-मारा कि ख़ाक-ए-दर नमी अर्ज़द

तुरा आँ बे कि रू-ए-ख़ुद ज़ मुश्ताक़ाँ बिपोशानी
कि सौद:-ए-जहाँदारी ग़म-ए-लश्कर नमी अर्ज़द

बिशौ ई नक़्श-ए-दिलतंगी कि दर बाज़ार-ए-यक रंगी
ब ने'मतहा-ए-गूनागूँ मय-ए-अहमर नमी अर्ज़द

दयार-ओ-यार मर्दुम रा मुक़य्यद मीकुनद वरन:
चि जा-ए-पारस कि ईं मेह्नत जहाँ यकसर नमी अर्ज़द

बस आसाँ मीनमूद अव्वल ग़म-ए-दरिया ब बू-ए सूद
ग़लत गुफ़्तम कि हर मौजश बसद गौहर नमी अर्ज़द

बिरौ गंज-ए-कनाअ'त जू व कुंज-ए-आ'फ़ियत बिनशी
कि यकदम तंगदिल बूदन ब बहर-ओ-बर नमी अर्ज़द

चू हाफ़िज़ दर कनाअ'त कोश व अज़ दुनिया-ए-दूँ बिगुज़र
कि यक जौ मिन्नत-ए-दू नाँ बसदमन ज़र नमी अर्ज़द

17.

सारी दुनिया की कीमत भी कर न सकेगी समता क्षण भर के दुख की
मेरी कंथा बेच खरीदो मदिरा इससे बढ़ कर मूल्य नहीं इसका।

लेता कोई नहीं एक प्याला भी देकर इसे हाट में मदिरा के
वाह! धन्य! संयम का चोला जिसकी कीमत नहीं एक प्याले की भी।

सम्राटों के मुकुट रोब वाले हैं लेकिन उनमें प्राणों का भय है
मन लुभावने हों किरीट लेकिन माथे की पीड़ा के वे कारण हैं।

प्रतिद्वंद्वी ने मुझको यों धिक्कारा चल तू हटा द्वार से सिर अपना
मेरे सिर को हुआ भला क्या जो कि द्वार की धूलि तलक के योग्य नहीं।

तेरे लिए यही अच्छा है आसक्तों से अपना वदन छिपा लेना
नृप होने का नशा भला पर आसक्तों की सेना तो दुखदाई है।

अपने मन से हीन भाव के दाग मिटा तू यह है एक रंग की हाट
रंग-बिरंगी चीजों का तो यहाँ एक मधु का प्याला भी मूल्य नहीं।

मुझको तो बस मातृभूमि के और मित्रजन के बन्धन ने बाँधा है
और नहीं तो पारस की धरती तो क्या जग का प्रपंच बेकार मुझे।

लाभ-गन्ध के कारण मुझको पहले तो आसान लगे सागर के कष्ट
भूल हुई थी, एक लहर भी नहीं काम की सौ मोती के विनिमय में।

जा तू खोज तोष की निधि को और शान्ति-सुख के कोने में रह निश्चिन्त
क्षण भर भी लघुता में जीना उचित नहीं है पूरे जल थल के बदले।

छोड़ो तुच्छ जगत की माया हाफ़िज़ की ही तरह करो संतोष सदा
सौ मन सोना भी मिल जाये, थोड़ा भी अहसान दुष्ट का उचित नहीं।

18.

दस्त अज़ तलब नदारम ता काम ए-मन बर आयद
या जाँ रसद ब जानाँ या जाँ ज़ातन बर आयद

बिकुशाये तुर्बतम रा बा'द अज़ वफ़ात व बिनिगर
कज़ आतिश-ए-दरुनम दूद अज़ कफ़न बर आयद

बिनुमाय रुख़ कि ख़ल्क़े वाल: शवन्द व हैराँ
बिकुशाय लब कि फ़रियाद अज़ मर्द-ओ-ज़न बर आयद

जाँ बर लबस्त व हसरत दर दिल कि अज़ लबानश
न गिरफ़्त: हेच कामे व जाँ अज़ बदन बर आयद

गुफ़्तम बख़ेश कब्वे बरगीर दिल दिलम गुफ़्त
कार-ए-कसेस्त ईं कू बा खेशतन बर आयद

हर यक शिकन ज़ ज़ुल्फ़त पंजाह शस्त दारद
चूँ ईं दिल-ए-शिकस्त: बा आँ शिकन बर आयद

बर बू-ए-आँ कि दर बाग़ आयद गुले चू रूयत
आमद नसीम व हरदम गिर्द-ए-चमन बर आयद

हरदम चू बेवफ़ायाँ न तवाँ गिरफ़्त यारे
मायेम व आस्तानश ता जाँ ज़ तन बर आयद

गोयन्द ज़िक्र-ए-ख़ैरश दर ख़ैल-ए-इ'श्क़ बाज़ां
हर जा कि नाम-ए-हाफ़िज़ दर अंजुमन बर आयद

18.

जब तक ईप्सित नहीं मिलेगा, नहीं तजूँगा अभिलाषा
या तो प्रियतम तक पहुँचेंगे या निकलेंगे मेरे प्राण।

मरने के उपरान्त खोद कर कब्र देखना मेरी
मेरे अन्तस् की ज्वाला से कफ़न धुआँता होगा।

अपना मुख दिखला कि विश्व हो जाये चकित और तल्लीन
खोलो अधर कि जन-जन के मुख खुलें प्रार्थना के स्वर में।

हो न सका गठबन्ध कामना का उनके अधरों से
और इधर ये प्राण पखेरू मचल उठे उड़ने को।

मैंने खुद से कहा कि प्यारे उससे अपना मन फेरो
मन बोला, यह वह कर सकता खुद जो अपने वश में है।

एक-एक लट में अनेक बल, अजब तुम्हारा जाल
मेरा टूटा हुआ हृदय फिर क्यों कर निकले इससे!

तेरे चेहरे जैसा सुन्दर-सुरभित कोई फूल खिले,
इस आशा में हवा लगाती पल-पल उपवन के फेरे।

हम तो उसकी ड्योढ़ी पर हैं जब तक तन में प्राण
मित्र बदलते रहना, यह तो व्यभिचारी का काम।

जब भी जहाँ कहीं मजलिस में आता है हाफ़िज़ का नाम
उसकी गणना होती केवल अमर प्रेमियों के दल में।

19.

ज़ाहिद-ए-ख़ल्वत नशीं दोश ब मयख़ानः शुद
अज़ सर-ए-पैमाँ गुज़श्त वर सर-ए-पैमानः शुद

शाहिद-ए-अ'ह्द-ए-शबाब आमदः बूदश ब ख़्वाब
बाज़ व पीरानः सर आ'शिक़-ओ-दीवानः शुद

मुग़बच्चः मी गुज़श्त राहज़न-ए-अ'क़्ल-ओ-दीं
दर पये आँ आश्ना अज़ हमः बेगानः शुद

आतिश-ए-रुख़्सार-ए-गुल ख़िर्मन-ए-बुलबुल वि सोख़्त
चेहर:-ए-ख़ंदान-ए-शम्अ' आफ़त-ए-पर्वानः शुद

सूफ़ी-ए-मज्लिस कि दी जाम-ओ-क़दह मी शिकस्त
दोश बयक जुर्आ'-ए-मय आ'क़िल-ओ-फ़र्ज़ानः शुद

नर्गिस-ए-साक़ी बिख़्वानद आयत-ए-अफ़्सूँगरी
हल्क़:-ए-औराद-ए-मा गर्दिश-ए-पैमानः शुद

मंज़िल-ए-हाफ़िज़ कनूँ बारगह-ए-किब्रियास्त
दिलबर-ए-दिलदार रफ़्त जाँ बर-ए-जानानः शुद

19.

मधुशाला में हुआ उपस्थित वनवासी तापस कल रात
तोड़ दिये संकल्प और यों प्याले के तट पर आया।

युवा काल का मनभाया जब उसके सपने में आया
तो फिर बढ़ी उमर में भी वह बना प्रेम का दीवाना।

बुद्धि-धर्म पर डाका डाले चलता था जब नवल किशोर
झुक जाते थे सभी अपरिचित उस परिचित के चरणों पर।

कुसुम कपोलों की ज्वाला से बुलबुल का खलिहान जला,
बन बैठा पतंग का संकट दीपक का हँसता चेहरा।

अब तक तोड़ चुका जो सूफ़ी प्याले और सुराही को
वही घूँट भर मदिरा पी कल रात हो गया चतुर सुजान।

साक़ी के मद भरे नयन यों पढ़ते हैं जादू के मंत्र
प्याले की गति पर चलते हैं धर्म कर्म के सभी नियम।

अब तो हाफ़िज़ का पड़ाव है केवल ईश्वर का दरबार
हृदय गया अब हृदयेश्वर को, प्राण गये प्राणेश्वर पास।

20.

सालहा दिल तलब-ए-जाम-ए-जम अज़ मा मीकर्द
आँचि ख़ुद दाश्त ज़ बेगानः तमन्ना मीकर्द

गौहरे कज़ सदफ़-ए-कौन-ओ-मकाँ बैरून बूद
तलब अज़ गुमशुदगान-ए-लब-ए-दरिया मीकर्द

मुश्किल-ए-ख़ेश बर पीर-ए-मुगाँ बुर्दम दोश
कू ब ताईद-ए-नज़र-हल्ल-ए-मुअ'म्मा मीकर्द

दीदमश ख़ुर्रम-ओ-ख़ंदाँ क़दह-ए-बादः बदस्त
व अंदराँ आईनः सदगूनः तमाशा मीकर्द

गुफ़्तम ईं जाम-ए-जहाँ बीं बतू के दाद हकीम
गुफ़्त आँ रोज़ कि ईं गुम्बद-ए-मीना मीकर्द

फ़ैज़-ए-रुहुलक़ुद्स अर बाज़ मदद फ़रमायद
दीगराँ हम बिकुनन्द आँचि मसीहा मीकर्द

गुफ़्त आँ यार कज़ू गश्त सर-ए-दार बलन्द
जुर्मश आँ बूद कि असरार हुवैदा मीकर्द

आँ हमः शो'बदः हा अ'क़्ल कि मीकर्द आँजा
सामरी पेश-ए-अ'सा-ओ यद-ए-बैज़ा मीकर्द

गुफ़्तमश सिलसिला-ए-ज़ुल्फ़-ए-बुताँ दानी चीस्त
गुफ़्त हाफ़िज़ गिलः अज़ शब-ए-यल्दा मीकर्द

20.

वर्षों से अभिलाषा मन की 'जम' का प्याला पाने की
दर-दर माँग रहा क्या पगले वह तो पास तुम्हारे है।

देश-काल की सीपी के जो बाहर है, उस मोती को
तट पर बैठा चाह रहा तू उनसे, जो खुद भरमे हैं।

कल जब अपनी उलझन लेकर पीरे मुगाँ के पास गया
एक नजर क्या देखा उसने, सुलझ गये सब उलझे तार।

लिये हाथ में मधु का प्याला, मुख पर हँसी और उल्लास
विविध रंग में परम सत्य को देख रहा वह दर्पण में।

मैंने पूछा, 'यह सबदरसी प्याला तूने कब पाया?'
कहा देव ने, 'उस दिन, जिस दिन नील गगन था रचा गया।'

एक बार उस कारुणीक की कृपा दृष्टि जो मिल जाये
तो फिर कोई भी कर लेगा ईसा जो कर गये यहाँ।

मृत्यु वरण कर बढ़ा दिया था जिसने शूली का गौरव
छिपा रहस्य बताया उसने, यह उसका अपराध हुआ।

विफल सामरी के जादू सब जैसे मूसा के सम्मुख
उसी तरह यह बुद्धि यहाँ पर अपना कौशल दिखलाती।

मैंने पूछा, 'बता भला ये केशों की लड़ियाँ क्या हैं?'
'यह तो उपालंभ है हाफ़िज अमानिशा के नाम यहाँ।'

21.

साक़ी हदीस-ए-सर्व-ओ-गुल-ओ-ला'लः मीरवद
वीं बहस बा सलासः ग़स्सालः मीरवद

मय दह कि नौ अ'रूस-ए-चमन हद्द-ए-हुस्न याफ़्त
कार-ए-ईं जामाँ ज़ सनअ्'त-ए-दल्लालः मीरवद

शक्कर शिकन शवन्द हमः तूतीयान-ए-हिन्द
जीं क़न्द-ए-पारसी कि ब बंगालः मीरवद

तय-ए-मकाँ बिबीं व ज़मौं दर सलूक-ए-शे'र
कि ईं तिफ़्ल-ए-यकशबः रह-ए-यकसालः मीरवद

बाद-ए-बहार मीवज़ाद अज़ बुस्तान-ए-शाह
व ज़ ज़ालः बादः दर कदह-ए-लालः मीरवद

आँ चश्म-ए-जादुआनः आ'बिद फ़रेब बीं
कश कारवाँ-ए-सहर बदुम्बालः मीरवद

ख़ीं करदः ख़िरामद ओ बर आ'रिज़्-ए-समन
अज़ शर्म-ए-रू-ए-ऊ अर्क़ अज़ जालः मीरवद

एमन मशव ज़ इ'श्वः-ए-दुनिया कि ईं अ'जूज़
मक्कारः मीनशीनद व मुह्तालः मीरवद

चूँ सामरी मबाश कि ज़र दाद अज़ ख़रे
मूसा बिहुस्त व अज़ पय-ए-गोसाला मीरवद

हाफ़िज़ ज़ शौक़-ए-मज्लिस-ए-सुल्ताँ ग़यास-उद्-दीन
ख़ामश मशव कि कार-ए-तू अज़ नालः मीरवद

21.

साक़ी सुनो, चल रही है यह सरौ, गुलौ, लाला की बात
यह आलाप हो रहा तीनों स्नान सेविकाओं के साथ।

मदिरा दे कि रूप की हद हो गई बाग की दुलहन में
ऐसे समय कुशल बिचबोलों से ही काम निकलता है।

पारस की यह मीठी मिसरी जाती है देखो बंगाल
इससे भारत के सब तोते हो जायेंगे शक्करखोर।

देश-काल का अतिक्रमण करती कविता की गति देखो
एक रात का शिशु चलता ज्यों एक साल के रस्ते पर।

राजा की बगिया से होकर हवा चल रही वासन्ती
और ओस से मदिरा भरती रक्त कुसुम के प्याले में।

अनासक्त जन को भटकाती वे जादूगरनी आँखें
उनके पीछे-पीछे देखो चलती टोने की टोली।

श्रमकण से भीगा वह चलता है तो उसके मुख की लाज
देख, चमेली के गालों पर ओस बिन्दु बन जाता श्वेद।

इस दुनिया के हाव भाव से कहीं न हो जाना आश्वस्त
यह बुढ़िया छल भरी यहाँ पर नित्य बहाने करती है।

मत बन तू सामरी कि जिसने छोड़ा स्वर्ण गधा लेकर
मूसा को तज भ्रमा किया जो बछड़े के पीछे पीछे।

नृपति गयासुद्दीन सभा का जो पूरा करना है शौक
तो फिर चुप मत रह तू हाफ़िज़, रुदन करेगा तुझे सकाम।

22.

इ'श्क़-ए-तू निहाल-ए-हैरत आमद
वस्ल-ए-तू कमाल-ए-हैरत आमद

बस गर्क़-ए-हाल-ए-वस्ल कि आख़िर
हम बा सर-ए-हाले हैरत आमद

न वस्ल बिमानद व न वासिल
आँ जा कि ख़याल-ए-हैरत आमद

अज़ हर तरफ़े कि गोश कर्दम
आवाज़-ए-सवाल-ए-हैरत आमद

आँ दिल बिनुमा कि दर रह-ए-ऊ
बर चेह्रः न ख़ाल-ए-हैरत आमद

शुद मुहतरम अज़ कमाल-ए-इज़्ज़त
आँ जा कि जलाल-ए-हैरत आमद

सर ता क़दम वजूद-ए-हाफ़िज़
दर इ'श्क़ निहाल-ए-हैरत आमद

22.

तेरा प्रेम हुआ है अद्भुत का पौधा,
तेरा मिलन अचंभे की परिसीमा है।

मिलन समाधि लीन जो जन बहुतेरे हैं
हैं वे भी आश्चर्यचकित इस हालत में।

वहाँ न होगा मिलन न तो मिलने वाले
आयेगा जब जहाँ कहीं अद्भुत का ध्यान।

जहाँ जिधर भी कान लगाया सुनने को
केवल अद्भुत के प्रश्नों की ध्वनि आई।

उसके पथ पर कोई हृदय बताओ तो
जिसके मुख पर लगा न हो तिल अद्भुत का।

हुआ चरम उत्कर्ष मान-मर्यादा का
जहाँ जिधर भी पहुँचा अद्भुत का आलोक।

चोटी से एड़ी तक हाफ़िज़ का अस्तित्व
प्रेम मग्न हो निकला अद्भुत का पौधा।

23.

ग़ुलाम-ए-नर्गिस-ए-मस्त-ए-तू ताजदारानन्द
ख़राब-ए-बादः-ए-ला'ल-ए-तू हुशियारानन्द

तुरा हया व मरा आब-ए-दीदा शुद ग़म्माज़
वगरन : आ'शिक-ओ-मा'शूक राज़दारानन्द

ब ज़ेर-ए-ज़ुल्फ़-ए-दोता चूँ गुजर कुनी बिनिगर
कि अज़ यमीन-ओ-यसारत चि बेक़रारानन्द

नसीब-ए-मास्त विहिश्त अय ख़ुदा शनास बिरौ
कि मुस्तहक़-ए-करामत गुनाहगारानन्द

न मन बरों गुल-ए-आरिज़ ग़ज़ल सरायेम व बस
कि अन्दलीब-ए-तू अज हर तरफ़ हजारानन्द

तू दस्तगीर शव अय ख़िज्र-ए-पय ख़जस्तः कि मन
पियादा मीरवम व हमरहाँ सवारानन्द

बिआ ब मयकदः व चेहरः अर्गवानी कुन
मरौ ब सूमिआ' कि आँजा सियाहकारानन्द

ख़लास-ए-हाफ़िज़ अज़ाँ ज़ुल्फ़-ए-ताबदार मबाद
कि बस्तगान-ए-कमन्द-ए-तू रुस्तगारानन्द

23.

जो तेरी मादक आँखों के दास वही सच्चे सम्राट
जो तेरी रक्तिम मदिरा के पागल वे ही चतुर सुजान।

लाज तुम्हारी आँसू मेरे चुगलखोर निकले देखो
और नहीं तो कैसे खुलते राज़ प्रिया के प्रेमी के।

तेरी सघन लटों के बन्दी इधर उधर जो पड़े हुए
उनकी व्यथा देखते जाना, जब तुम इस पथ से गुजरो।

अरे पुजारी, भाग, स्वर्ग पर केवल स्वत्व हमारा है
ईश-कृपा के वे अधिकारी जो हैं पतित, अपावन हैं।

तेरे कुसुम-कपोलों का बस मैं ही नहीं एक स्वरकार
दिशा-दिशा अनगिनत बुलबुलें लगी हुई स्तुति में सोच्चार।

पथ दर्शक शुभ चरण खिज़्र तू जरा थाम ले मेरा हाथ
सहयात्री तो घुड़सवार हैं, मैं ही केवल पैदल हूँ।

मधुशाला में आ अपने चेहरे को कर मदिरा से लाल
पूजा घर मत जा कि वहाँ हैं काली करतूतों वाले।

कभी न छूटे बन्धन, हाफ़िज़ का घुँघराली अलकों से
हैं सच्चे स्वाधीन यहाँ पर जो जो तेरे बन्दी हैं।

24.

कनूँ कि दर चमन आमद गुल अज अ'दम ववुजूद
बनफ़्शः दर क़दम-ए-ऊ निहाद सर ब सुजूद

बिनोश जाम-ए-सुबूहो व नालः-ए-दफ़-ओ-चंग
बिबोस ग़बग़ब-ए-साक़ी व नग़्मः-ए-नै-ओ-ऊ'द

ब बाग़ ताज़ः कुन आईन-ए-दीन-ए-ज़रदुश्ती
कनूँ कि लालः बर अफ़्रोख़्त आतिश-ए-नुमूद

ज़ दस्त-ए-शाहिद-ए-सीमीं इ'ज़ार ई'सा दम
शराब नोश व रिहा कुन हदीस-ए-आ'द-ओ सुमूद

जहाँ चू ख़ुल्द-ए-बरीं शुद बदौर-ए-सोसन-ओ-गुल
वले चि सूद कि दर वे न मुमकिनस्त ख़ुलूद

शुद अज़ फ़रोग़-ए-रियाहीं चू आस्माँ गुलशन
ज़ युमन-ए-अख़्तर-ए-मैमून व ताले'मस्ऊ'द

चू गुल सवार शुद बर हवा सुलेमाँवार
सहरगह मुर्ग़ दर आयद व नग्मः-ए-दाऊद

ब दौर-ए-गुल मनशीं बे शराब-ओ-शाहिद-ओ-चंग
कि हमचू दौर-ए-बक़ा हफ़्तः बूद मा'दूद

बियार जाम-ए-लबालब ब याद-ए-आसिफ-ए-अ'हद
ब ज़ेर-ए-मुल्क-ए-सुलेमाँ इमादुद्दीन महमूद

बूद कि मजलिस-ए-हाफ़िज़ ब एमुने तर्बियश
हर आँचि मीतलबद जुम्लः बाशदश मौजूद

24.

कानन में साकार हो गया जब अमूर्त जग का यह फूल
हुई प्रार्थना निरत बनफ़्शा सिर रख उसके चरणों पर।

आ कि भोरिया प्याला पी तू डफ-मृदंग की तालों पर
वेणु और तंत्री की लय पर चूम चिबुक मधुबाला का।

उपवन में पारसी धर्म के नियमों को फिर करो नवीन
रक्त कुसुम ने खिल, नम्रूद-अग्नि को प्रकट किया अब तो।

जिसके गोरे गाल रजत से, जीवन प्रद ईसा सी साँस
उस प्रिय के कर से मदिरा पी, आद-समूद कथा को छोड़।

सोसन और गुलाबों की मधु ऋतु में स्वर्ग हुआ संसार
किन्तु भला क्या लाभ कि जब संभव न हुआ अमरत्व यहाँ।

आसमान सी हुई वाटिका गमकीली हरियाली से
हुआ आगमन शुभ तारे का, जागा जीवन का सौभाग्य।

सुलेमान की तरह फूल जब पवन-अश्व पर हुआ सवार
गाने लगे विहग प्रातः यों जैसे दाऊदी संगीत।

मधु ऋतु में मत रहो, सुरा, सुन्दरी और संगीत बिना
जीवन की ही तरह स्वल्प है अवधि यहाँ इन घड़ियों की।

है आसिफ, महमूद इमादुद्दीन आज का, देश-अमात्य-
सुलेमान का, उसकी स्मृति में भरा लबालब प्याला ला।

उसकी छत छाँह में शायद हो हाफ़िज़ की महफ़िल में
वे सारी वस्तुएँ उपस्थित, इच्छा जिनकी मन में है।

25.

गुफ़्तम केम दहान-ओ-लबत कामराँ कुनन्द
गुफ्ता ब चश्म हर चि तू गोई हमाँ कुनन्द

गुफ़्तम खिराज-ए-मिस्र तलब मी कुनद लबत
गुफ्ता दरीं मुआ'मलः कमतर जियाँ कुनन्द

गुफ्तम ब नुक्तः-ए-दहनत ख़ुद कि बुर्द राह
गुफ्ता ईं हिकायतेस्त कि बा नुक्तः दाँ कुनन्द

गुफ्तम सनम परस्त मशव बा समदनशीं
गुफ्ता ब कू-ए-इ'श्क़ हम ईन-ओ-हम आँ कुनन्द

गुफ्तम हवा-ए-मयकदः ग़म मीबुर्द जादिल
गुफ्ता खुश आँ कशाँ कि दिले शादमाँ कुनन्द

गुफ़्तम शराब-ओ-ख़िर्क़ः न आईन-ए-मज़हबस्त
गुफ़्त ईं अ'मल ब मज़्हब-ए-पीर-ए-मुग़ाँ कुनन्द

गुफ़्तम ज़ ला'ल-ए-नोश लबाँ पीर रा चि सूद
गुफ़्ता ब बोसः-ए-शक्करीनश जवाँ कुनन्द

गुफ़्तम कि ख़्वाजः के बसर-ए-हजलः मीरवद
गुफ़्त आँ ज़माँ कि मुश्तरी-ओ-महक़िराँ कुनन्द

गुफ़्तम दुआ'-ए-दौलत-ए-तू विर्द-ए-हाफ़िज़स्त
गुफ़्त ईं दुआ' मलाइक-ए-हफ़्त आस्माँ कुनन्द

25.

मैंने पूछा, सफल करेंगे कब तेरे मुख-अधर मुझे
वह बोला, वे वही करेंगे जो कुछ तू फरमायेगा।

मैं बोला, उपहार चाहते मिश्र देश ये तेरे होंठ
उसने कहा कि इसमें तो थोड़े ही होंगे घाटे में।

मैंने पूछा, तेरे मुख की बिन्दु राह किसने पाई
उसने कहा कि ये बातें तो मर्मज्ञों से होती हैं।

मैं बोला, मत बनो मूर्ति पूजक, बैठो ईश्वर के पास
उसने कहा, प्रेम पथ में तो यह भी वह भी चलता है।

मैंने कहा, चाह मधुशाला की मन के दुख हरती है
वह बोला, वे कितने अच्छे जो मन को खुश करते हैं।

मैं बोला, मदिरा पाटम्बर का मजहब में मेल नहीं
उसने कहा कि पीरे मुगाँ के मजहब में यह चलता है।

मैंने कहा, वृद्ध को तेरे मधुर अधर से क्या मिलना
वह बोला, मधु चुम्बन से बूढ़े जवान हो जाते हैं।

मैंने पूछा, राजन तू कब दुल्हन के घर जायेगा
वह बोला, जब चन्द्रकला से सुर गुरु का होगा संयोग।

मैंने कहा, तुम्हारी दौलत का हाफ़िज़ शुभकामी है
वह बोला, यह दुआ सप्त अम्बर के सुर गण करते हैं।

26.

गौहर-ए-मख़्ज़न-ए-अस्रार हमानस्त कि बूद
हुक़्क़ः-ए-मेहर बदाँ मुह-ओ-निशानस्त कि बूद

अज सबा पुर्स कि मारा हमः शब ता दम-ए-सुब्ह
बू-ए-ज़ुल्फ़-ए-तू हमाँ मूनिस-ए-जानस्त कि बूद

तालिब-ए-ला'ल-ओ-गुहर नेस्त वगर्नः ख़ुर्शीद
हम चुनाँ दर अ'मल-ए-मादन-ओ कानस्त कि बूद

रंग-ए-ख़ून-ए-दिल-ए-मारा कि निहाँ कर्द ख़तत
हम चुनाँ अज लब-ए-ला'ल-ए-तू अयानस्त कि बूद

आ'शिक़ाँ महरम-ए-अस्रार-ए-अमानत बाशन्द
लाजरम चश्म-ए-गुहर बार हमानस्त कि बूद

कुश्तः-ए-ग़म्ज़ः-ए-ख़ुद रा बज़ियारत मी आई
ज़ाँ कि बेचारः हमाँ दिल निगरानस्त कि बूद

ज़ुल्फ़-ए-हिन्दू-ए-तू गुफ़्तमकिदिगर रह नज़नद
सालहा रफ़्त व बदाँ सीरत-ओ-शानस्त कि बूद

हाफ़िज़ बाज़ नुमा क़िस्सः-ए-ख़ूनाबः-ए-चश्म
कि दरीं चश्मः हमाँ आब रवानस्त कि बूद

26.

देख रहस्य कोश का मोती वैसा ही है जैसा था
मुद्रा युक्त प्रेम मंजूषा वैसी ही है जैसी थी।

निशारंभ से भोर तलक तेरे केशों की मधुर सुगन्ध
पूछ पवन से, मेरे मन यों बसी कि जैसे पहले थी।

मणि मानिक मुक्ता के सन्धानी ही नहीं रहे वरना
कर्मनिरत सूरज खानों में वैसा ही है जैसा था।

आवृत जो तेरे रोमों से मेरे हृदय रक्त का रंग
तेरे अधर-लाल से वह यों प्रकट कि जैसे पहले था।

प्रेमी जन तो गोपन रखने वाले हैं थाती का मर्म
पर मोती ढलकाने वाली आँखें वैसी ही, ज्यों थीं।

निज कटाक्ष से मारा, उसकी पूछताछ करने तू आ
क्योंकि बिचारा हृदय प्रतीक्षा में वैसा ही, जैसा था।

सोचा, तेरी कुटिल अलक अब और न डाका डालेगी
वर्षों गये, स्वभाव-गर्व पर वही रहा जो पहले था।

हाफ़िज़ पुनः दिखा आँखों का रक्त बहाने वाला दृश्य
क्योंकि आँख में जल प्रवाह अब भी वैसा ज्यों पहले था।

27.

गर ज़ुल्फ़-ए-परीशानत दर दस्त-ए-सबा उफ़्तद
हर जा कि दिले बाशद बरबाद-ए-हवा उफ़्तद

मा किश्ती-ए-सब्र-ए-ख़ुद दर बह्र-ए-ग़म अफ़गंदेम
ता आख़िर अज़ीं तूफ़ाँ हर तख़्तः कुजः उफ़्तद

हर कस ब तमन्ना-ए-फ़ाल अज रुख़-ए-ऊ गीरद
ब तख़्तः-ए-फ़ीरोज़ी ता करा उफ़्तद

आँ बादः कि दिलहारा अज़ ग़म दह्द आज़ादी
पुर ख़ून-ए-जिगर गर्दद ता जाम ब मा उफ़्तद

गर ज़ुल्फ़-ए-सियाहतरा मन मुश्क-ए-ख़ुतन गुफ़्तम
दर ताब मशौ जानाँ दर गुफ़्तः ख़ता उफ़्तद

हाल-ए-दिल-ए-हाफ़िज़ शुद अज़ दस्त-ए-ग़म-ए-हिज्रत
चूँ आ'शिक़-ए-सरगर्दां कज़ दोस्त जुदा उफ़्तद

27.

अगर विथुरे तुम्हारे केश लग जाएँ हवा के हाथ
जहाँ भी है हृदय, हो जाय वह तो हवा में बरबाद।

व्यथा के सिन्धु में मैंने बहा दी धैर्य की नैया
कि देखूँ आँधियों में पटरियाँ इसकी कहाँ पहुँचे।

सुमुख की चाह में हर एक करता भाग्य की गणना
विजय के तख़्त पर देखें गिरे किस सुभग का पासा।

हृदय दुख मुक्त जो करती, जिगर के लहू से भरती
वही मदिरा कि जब प्याला हमारे पास आता है।

अगर मैंने तुम्हारे केश को कह दिया कस्तूरी
न कर तू रोष प्यारे, हो गई कुछ भूल कहने में।

तुम्हारे विरह-दुख के हाथ हाफ़िज़ का हुआ यों हाल
बिछुड़ प्रिय से कि कोई सिरफिरा हो जाय ज्यों बेहाल।

28.

मुज़्दः अय दिल कि मसीहा नफ़से मीआयद
किज़ अनफ़ास-ए-ख़ुशश बू-ए-कसे मीआयद

अज़ ग़म-ओ-दर्द मकुन नालः-ओ-फ़रियाद कि दोश
ज़दः अम फ़ाले व फ़रियाद रसे मीआयद

ज़ आतिश-ए-वादी-ए-ऐमन न मनम ख़ुर्रम व बस
मूसा ईंजा ब उम्मीद-ए-क़बसे मी आयद

हेचकस नेस्त कि दर कू-ए-तू अश कारे नेस्त
हर कस ईंजा बा उम्मीद-ए-हवसे मी आयद

ख़बरम नेस्त कि मंज़िलगह-ए-मक़सूद कुजास्त
ईं क़दर हस्त कि बांग-ए-जरसे मी आयद

जुरआ'दह कि बमयख़ानः-ए-अर्बाब-ए-करम
हर हरीफ़े ज़ पय-ए-मुल्तमिसे मी आयद

ख़बर-ए-बुलबुल-ए-ईं बाग़ मपुर्सीद कि मन
नालः मीशनूम कज़ क़फ़से मी आयद

दोस्त रा गर सर-ए-पुर्सीदन-ए-बीमार-ए-ग़मस्त
गो बिया ख़ुश कि हनोज़श नफ़से मी आयद

यार दारद सर-ए-सैद-ए-दिल-ए-हाफ़िज़ याराँ
शाहबाज़े बशिकार-ए-मगसे मी आयद

28.

खुशखबरी है मन, कि आ रहा ईसा सी साँसों वाला
उसकी मधुमय निश्वासों से गन्ध किसी की आती है।

रुदन और फरियाद न कर तू व्यथा-वेदना के कारण
फलादेश देखा यों कल, दुख हर्ता आने वाला है।

ऐमन घाटी के प्रकाश से मैं ही केवल मुदित नहीं
यहाँ अग्निकण की आशा में मूसा भी आया करते।

ऐसा कोई नहीं जिसे तेरे पथ से हो नहीं लगाव
किसी कामना की आशा में आता है हर व्यक्ति यहाँ।

कुछ भी ज्ञात नहीं है मुझको अभिलाषा का कहाँ पड़ाव
ऐसी है कुछ बात कि आती रहती घंटे की आवाज।

एक घूँट दे क्योंकि यहाँ इस दाता की मधुशाला में
आता है हर एक बन्धु अपने मन में लेकर आशा।

इस बगिया की बुलबुल की कैसी है हालत, मत पूछो
क्योंकि सुन रहा हूँ मैं रोदन जो कि पींजड़े से आता।

अगर दोस्त की मंसा, दुख-पीड़ित का हाल पूछने की
तो कह दो कि खुशी से आये, साँस अभी तक चलती है।

हाफ़िज़ के दिल के शिकार का अभिप्राय है प्रियतम का!
मक्खी के शिकार को मित्रो, शाही बाज आ रहा है!

29.

दीगर ज़ शाख़-ए-सर्व-ए-सही बुलबुल-ए-सबूर
गुलबाँग ज़द कि चश्म-ए-बद अज़ रू-ए-गुल बदूर

अय गुल बशुक्र-ए-आँ कि शिगुफ़्ती बकाम-ए-दिल
बा बुलबुलान-ए-बेदिल-ए शैदा मकुन ग़रूर

अज़ दस्त-ए-ग़ैबत-ए-तू शिकायत नमीकुनम
ता नेस्त ग़ैबते नदहद लज़्ज़त-ए-हुज़ूर

गर दीगराँ ब ऐ'श-ओ-तरब ख़ुर्रमन्द-ओ-शाद
मारा ग़म-ए-निगार बूद माया-ए-सुरूर

ज़ाहिद अगर ब हूर-ओ-क़ुसूरस्त उम्मीदवार
मारा शराबख़ाना क़ुसूरस्त व यार हूर

मय ख़ुर ब बाँग-ए-चंग-ओ-मख़ुर ग़ुस्सः वर कसे
गोयद तुरा कि बादः मख़ुर गो हू-उल-ग़फ़ूर

हाफ़िज़ शिकायत अज़ ग़म-ए-हिज्राँ चि मी कुनी
दर हिज्र वस्ल बाशद-ओ-दर ज़ुल्मतस्त नूर

29.

वन झाऊ की डाली से फिर आई बुलबुल की आवाज
बुरी नजर से दूर रखे ईश्वर गुलाब के मुखड़े को।

मनचाहा तू खिला पुष्प तो यह कृतज्ञता की है बात
पर इस कारण इतरा मत प्रेमाकुल बुलबुल के सम्मुख।

तू जो कहता है अदृश्य तो इसकी नहीं शिकायत है
जब वियोग ही नहीं हुआ तो मिलने में फिर क्या आनन्द।

यदि औरों ने सुख-साधन के कारण पाई हँसी-खुशी
हमने प्राण-प्रिया के दुख की तन्मयता की निधि पाई।

अगर स्वर्ग की परियों का, मधुशाला का अभिलाषी भक्त
तो मेरी प्रियतमा परी है, मदशाला ही मधुशाला।

गुस्सा मत कर और पिये जा मदिरा तू डंके की चोट
कोई मना करे तो कहना क्षमाशील वह मालिक है।

विरह वेदना को तू हाफ़िज़ क्यों उलाहने देता है
रहता मिलन विरह के अन्दर अन्धकार में ज्यों आलोक।

30.

ख़ुशा शीराज़-ओ-वज़्अ'-ए-बेमीसालश
ख़ुदा वन्दा निगहदार अज़ ज़वालश

ज़ रुक्नाबाद-ए-मा सद लौहश उल्लाह
कि उ'म्र-ए-ख़िज़्र मीबख़्शद ज़ुलालश

मियान-ए-जा'फ़राबाद-ओ-मुसल्ला
अ'बीर आमेज़ मीआयद शुमालश

ब शीराज़ आई व फ़ैज़-ए-रूह-ए-कुद्स
ब ख़्वाह अज़ मर्दुम-ए-साहिब कमालश

कि नाम-ए-क़न्द-ए-मिस्री बुर्द आँजा
कि शीरीनाँ नदादन्द इन्फ़आ'लश

सबा ज़आँ लूली-ए-शंगूल-ए-सर मस्त
चि दारी आगही चूनस्त हालश

मकुन बेदार अज़ ईं ख़्वाबम ख़ुदारा
कि दारम इश्रत-ए-ख़ुश बाख़यालश

गर आँ शीरीं पिसर ख़ूनम बिरेज़द
दिला चूँ शीर-ए-मादर कुन हलालश

चिरा हाफ़िज़ चू मीतरसीदी अज हिज्र
न कर्दी शुक्र-ए-अय्याम-ए-विसालश

30.

प्यारा है शीराज, यहाँ की वास्तुकला भी अनुपम
नष्ट न होने पाये भगवन, इनकी रक्षा करना।

रुक्नाबाद नहर चिरजीवी होवे ईश कृपा से
उसका पावन नीर खिज़्र का जीवन देने वाला।

अहा जाफराबाद-मुसल्ला कानन बीच विहरती
मृगमद की मादक सुगन्ध से भरी हवा उत्तर की।

इस शीराज नगर में आकर कलाविदों सँग बैठो
मनवांछा जिब्रील संग की कर लो यों तुम पूरी।

कौन भला, जिसको न लजाये मधुर-अधर बालाएँ
मिस्र देश की मिसरी का जिसने बस नाम लिया हो।

वह जो मद से भरी चंचला मधुर स्वरों की गायक
तुझे पता क्या पवन, बता तो कैसी उसकी हालत?

ईश्वर की खातिर मुझको तू जगा न इस सपने से
उसके ध्यान लगन मेरा मन डूबा सुख-सागर में।

ऐ मन, यदि मधुमय किशोर वह लहू बहाये मेरा
माँ के दूध समान इसे तू पावन धर्म समझना।

इस वियोग से प्यारे हाफ़िज़ क्यों तू है भयभीत
उन संयोग दिनों का तूने कब माना आभार।

31.

हातिफ़े अज़ गोश:-ए-मयख़ान: दोश
गुफ़्त वि बख़्शान्द गुनह मय विनोश

ईं ख़िरद-ए-ख़ाम व मयखान: बर
ता मय-ए-ला'ल आवर्दश ख़ूँ व जोश

अ'फ़्व-ए-ख़ुद: बेशतर अज़ जुर्म-ए-मास्त
नुक्त:-ए-सरबस्त: चि गोई ख़मोश

गर च: विसालश न ब कोशिश दहन्द
हर क़दर अय दिल कि तवानी विकोश

गोश-ए-मन-ओ-हल्क़:-ए-गेसू-ए-यार
रू-ए-मन-ओ-ख़ाक-ए-दर-ए मयफ़रोश

रिन्दी-ए-हाफ़िज़ न गुनाहेस्त सा'ब
बा करम-ए-बादशाह-ए-ऐ'ब पोश

31.

देवदूत बोला यों कल मधुशाला के कोने से
वह अपराध क्षमा कर देता है, तुम मदिरा पीओ।

अपनी इस कमजोर समझ को ले चल मधुशाला में
नया जोश भर देगी इसके रक्तकणों में मदिरा।

प्रभु की क्षमाशीलता मेरे अपराधों से बढ़ कर
चुप रह, फिर क्यों बता रहा तू गोपन बात हमारी।

यद्यपि कोशिश करके उसका मिलन नहीं होता है
फिर भी ऐ मेरे मन, सब विधि करता रह तू उद्यम।

मेरे कान और प्रियतम की अलकों की जंजीर
मेरा मुख औ' मधुवितरक के दरवाजे की धूल।

हाफ़िज़ का मधुपान नहीं है बहुत बड़ा अपराध
दोष पराये ढकने वाले नृप की परम कृपा से।

32.

सवाद-ए-दीदः-ए-मन शुद ज़ आब-ए-चश्म बयाज़
हनोज़ चन्द निगारा ज़ मन कुनी ए'राज

बिया कनार बिगीरेम व आश्ती बिकुनेम
गुज़श्तः याद चि आरी मज़ा मज़ा मामाज़

चि तेज़ीस्त बमिज़गान-ए-चश्मः-ए-ऊ यारब
बुरीद जामः-ए-तक़्वा बग़म्ज़ः चूँ मिक़राज़

चू अ'क्स-ए-ज़ुल्फ़-ओ-रुख़त दर मियान-ए-चश्म उफ़्ताद
गिरफ़्त दीदः-ए-मर्दुम अज़ाँ सवाद-ओ-बयाज़

ग़ज़ल ब क़ाफ़ियः-ए-ज़ाद नायद अय हाफ़िज़
मगर हम अज़ तू बिआयद तबीय'त-ए फ़ैयाज़

32.

मेरी आँखों की श्यामलता आँसू से हो गई सफ़ेद
कब तक और करोगी यों तुम प्रिये हमारी अवहेला।

आओ तो मेरे करीब, हम मिल कर झगड़े सुलझा लें
बीत गई सो गई, याद क्या करती है तू बीती बात।

भगवन उसकी आँखों की पलकों का कैसा तीक्ष्ण कटाक्ष
कतर दिया जिसने कैंची सा मेरे संयम का चोला।

तेरे केश और मुख का जब नयनों में प्रतिविम्ब पड़ा
श्वेत-श्यामता उससे पाई तब मनुष्य की आँखों ने।

मुश्किल बहुत 'जाद' की तुक है इससे ग़ज़ल नहीं बनती
लेकिन शायद तुझसे हाफ़िज़ होवे भावों का विस्तार।

33.

सहर चू बुलबुल-ए-बेदिल दमे शुदम दर बाग़
कि ता चू बुलबुल-ए-बेदिल कुनम इ'लाज-ए-दिमाग़

ब चेहर:-ए-गुल-ए-सूरी निगाह मीकर्दम
कि बूद दर शब-ए-तारे ब रौशनी चू चिराग़

चुनाँ ब हुस्न-ओ-जवानी-ए-ख़ेशतन मग़रूर
कि दाश्त अज़ दिल-ए-बुलबुल हज़ार गुन: फ़राग़

कुशाद: नर्गिस-ए-रा'ना बहसरत आब अज़ चश्म
निहाद: लाल:-ए-हम्रा ब जान-ओ-दिल सद दाग़

ज़ुबाँ कुशीद: चू तेग़े बसर ज़ानश सोसन
दहाँ कुशाद: सक़ायक़ चू मर्दुम-ए-ऐ़फ़ाग़

यके चूँ बाद: परस्तां सुराही अन्दर दस्त
यके चू साक़ी-ए-मस्ताँ बकफ़ गिरफ़्त: अयाग़

निशात-ओ-ऐ'श-ए-जवानी चू गुल ग़नीमत दाँ
कि हाफ़िज़ा मबूद बर रसूल ग़ैर बलाग़

33.

प्रात काल इसलिए गया मैं पुष्प वाटिका में कुछ देर
व्याकुल बुलबुल सा मैं भी अपने मन का कर लूँ उपचार।

लाल रंग वाले प्रसून के मुख को यों देखा मैंने
दीपक ज्यों प्रकाश करता है रजनी के अँधियारे में।

अपने रूप और यौवन के मद में वह यों खोया है
करे हजारों तरह उपेक्षा दुखी बिचारी बुलबुल की।

रूपवती नरगिस अभिलाषा में दृग-जल ढलकाती है
रक्त कुसुम की छाती में भी पड़े हुए हैं सौ-सौ दाग।

सिर उतारने को प्रस्तुत तलवार सदृश सोसन की जीभ
और शकायक यों मुंह खोले जैसे कोई चुगलीखोर।

मदपायी की तरह एक तो लिये सुराही अपने हाथ
और एक अलमस्त पिलानेवाली ज्यों प्याला थामे।

यौवन-सुख-विलास को हाफ़िज़ समझ फूल की तरह विभूति
पैगम्बर का काम सिर्फ़ सन्देशा पहुँचाने तक है।

34.

मुबाद कस चू मन-ए-ख़स्तः मुब्तला-ए-फ़िराक़
कि ऊ'म्र-ए-मन हमः बिगुज़श्त दर बला-ए-फ़िराक़

ग़रीब-ओ-आ'शिक़-ओ-बेदिल फ़क़ीर-ओ-सरगदाँ
कशीदः-ए-मेह्नत-ए-अय्याम-ओ-दर्दहा-ए-फ़िराक़

अगर बदस्त-ए-मन उफ़्तद फ़िराक़ रा बिकुशम
ब आब-ए-दीदः दहम बाज़ ख़ूँ बहा-ए-फ़िराक़

कुजा रवम चि कुनम हाल-ए-दिल किरा गोयम
कि दाद-ए-मन बिसितानद-दहद जज़ा-ए-फ़िराक़

फ़िराक़ रा ब फ़िराक़-ए-तू मुब्तला साज़म
चुनाँ कि ख़ूँ बिचिकानम ज़ दीदहा-ए-फ़िराक़

मन ज़ कुजा-ओ-फ़िराक़ अज़ कुजा-ओ-ग़म ज़ कुजा
मगर कि ज़ाद मरा मादर अज़ बरा-ए-फ़िराक़

ब दाग़-ए-इ'श्क़-ए-तू हाफ़िज़ चू बुलबुल-ए-सहरी
ज़नद ब रोज़-ओ-शबाँ ख़ूँ फ़िशाँ नवा-ए-फ़िराक़

34.

ईश्वर करे, न हो कोई मुझसा वियोग का मारा
विरह-वेदना में मेरा तो बीत गया सब जीवन।

हूँ निराश, पागल फ़कीर मैं तो परदेसी प्रेमी
ढोता हूँ दुर्दिन के संकट और विरह की पीड़ा।

यदि वियोग लग जाय हाथ तो उसकी हत्या कर दूँ
फिर अपने आँसू से उस हत्या का मूल्य चुका दूँ।

जाऊँ कहाँ, करूँ क्या, मन का हाल किसे बतलाऊँ
मुझ पर करके न्याय, करे जो इस वियोग को दण्डित।

इस वियोग को कर दूँ मैं इस तरह विरह से पीड़ित
जैसे मैं अपनी आँखों से शोणित बहा रहा हूँ।

भला कहाँ मैं, विरह कहाँ है और कहाँ यह पीड़ा
इस वियोग के लिए कदाचित् माँ ने मुझे जना है।

तेरे प्रणय चिह्न के कारण हाफ़िज विरह व्यथा में
रक्त बरसता रोदन करता सदा प्रात बुलबुल सा।

35.

मक़ाम-ए-अम्न-ओ-मय-ए-बेग़श-ओ-रफ़ीक-ए-शफ़ीक़
गरत मुदाम मयस्सर शवद जहे-तौफ़ीक़

जहान-ओ-कार-ए-जहाँ जुम्ल: हेच दर हेचस्त
हज़ार बार मन ईं नुक्त: कर्दाअम तहक़ीक़

दरेग़-ओ-दर्द कि ताईं ज़मा नदानस्तम
कि कीमिया-ए-स'आदत रफ़ीक़ बूद रफ़ीक़

ब अम्ने रौ-ओ-फ़ुर्सत शुमुर ग़नीमत-ए-वक़्त
कि दर कमीं गह-ए-उ'म्रन्द कातआ'न-ए-तरीक़

कुजास्त अह्ल-ए-दिले ता कुनद दलालत-ए-ख़ैर
कि मावदोस्त न बुर्दैम रह बहेच तरीक़

फ़िदा-ए-ग़म्ज़:-ए-साक़ी हज़ार जाँ आँदम
कि तर कुनद लब-ए-ला'ल अज़ शराब हम चू अक़ीक़

हलावते कि तुरा दर चह-ए-ज़नख़दानस्त
बकना-ए-ऊ नरसद सद हज़ार फ़िक्र-ए-अमीक़

अज़ आँ ब रंग-ए-अक़ीक़स्त अश्क-ए-मन हम: वक़्त
कि मुह-ए-ख़ातिम-ए-चश्म-ए-मनत हम चू अक़ीक़

बिया कि तौब: ज़ ला'ल-ए-निगार-ओ-ख़ंद:-ए-जाम
तसव्वुरेस्त कि अ'क़्लश नमी कुनद तस्दीक़

चख़ंदा गुफ़्त कि हाफ़िज़ ग़ुलाम-ए-तब्अ-ए-तूअम तू
बिबीं कि ता बचि हद्दम हमी कुनद तहमीक़

शान्ति का घर, शुद्ध मदिरा, दया वाले मित्र
यदि सदा तुझको मिलें तो [illegible]

जगत और प्रपंच जग के तुच्छ हैं अति तुच्छ
परख कर देखा इन्हें मैंने हजारों बार।

दुःख है, समझो न मैंने अब तलक यह बात
औषधी कल्याण की है मित्र केवल मित्र।

शुभ समझ, जो मिला अवसर, जा सुरक्षित ठौर,
घात में हैं आयु की ये पन्थ के बटमार।

कहाँ है सहृदय कि जो शुभ का दिखा दे पन्थ
क्योंकि ऐसे मित्र की मैंने न पायी राह।

तजूँ साक़ी की अदा पर मैं हजारों प्राण
करे सिक्त अकीक मद से अधर मेरे लाल।

कूप में तेरी चिबुक के हैं मधुर जो स्वाद
उस गहन तक पहुँच पाते नहीं लाख विचार।

अश्रु कण हर वक्त मेरे इसलिए हैं लाल
छाप मेरी नेल-मुंदरी की अकीक समान।

प्रेयसी के अधर, प्याले की हँसी का त्याग
बात ऐसी है, नहीं जो बुद्धि को स्वीकार।

हूँ सदा हाफ़िज़ तुम्हारी कामना का दास
देख, क्या बुद्धू बनाता मुझे, यह परिहास।

36.

हज़ार दुश्मनम अर मीकुनन्द क़स्द-ए-हलाक
गर म तू दोस्ती अज़ दुश्मनाँ न दारम बाक

मरा उम्मीद-ए-विसाल-ए-तू ज़िन्दा मीदारद
वगर्न: हरदमम अज़ हिज्र-ए-तुस्त बीम-ए-हलाक

नफ़स नफ़स अगर अज़ बाद न शुनूम बूयत
ज़माँ ज़माँ कुनम अज गम चूँ गुल गिरेबाँ चाक

रवद ब ख़्वाब दो चश्म अज़ खयाल-ए-तू हैहात
बूद सबूर-ए-दिल अन्दर फ़िराक़-ए-तू हाशाक

अगर तू ज़ाख़्म ज़नी बेकि दीगरे मर्हम
व गर तू ज़ह्र दिही बे कि दीगरे तिर्याक

तुरा चुनाँ कि तू ई हर नज़र कुजा बीनद
ब क़द्र-ए-बीनश-ए-ख़ुद हरकसे कुनद इद्राक

इनाँ न पेचम अगर मीज़नी ब शम्शीरम
सुपुर कुनम सर-ओ-दस्त नदारम अज़ फ़िताक

ब चश्म-ए-ख़ल्क़ अज़ीज़ आँगहे शवी हाफ़िज़
कि बर दरश बिनिही रू-ए-म'स्कनत बर ख़ाक

36.

अगर हजारों दुश्मन मेरा वध करने का करें विचार
दुश्मन से मैं नहीं डरूँगा जो तू सखा रहे मेरा।

तेरे मधुर मिलन की आशा मुझको जीवित रखती है
वरना तेरा विरह मुझे तो सदा मृत्यु भय दिखलाता।

साँस-साँस में पवन सहारे तेरी गन्ध न जो पाऊँ
तो फिर दुख से मैं भी क्षण-क्षण फाड़ूं वस्त्र फूल जैसे।

तज कर तेरा ध्यान, नींद तक आँखें पहुँचे! ना ना ना
तेरी विरह घड़ी में मन को धीरज आये! ना ना ना।

जो तू घायल करे, सुखद है मुझे अन्य के मरहम से
जो तू विष दे, मीठा मुझको किसी और के अमृत से।

जैसा तू है, कहाँ देख पाता है तुझको हर कोई
जैसी जिनकी दृष्टि, तुझे वे वैसा ही देखा करते।

जो तू मारेगा कटार से, मोड़ूँगा मैं नहीं लगाम
सिर सौंपूँगा, हाथ न खींचूँगा शिकार के झोले से।

जब अपना विनम्र मुख उसकी द्वार धूलि पर रख दोगे
तब तुम हो जाओगे हाफ़िज जग की आँखों के प्यारे।

37.

अय ख़त चूँ ख़ुल्द-ओ-लाल'त सल्सबील
सल्सबीलत कर्द जान-ओ-दिल सबील

सब्ज़ा पोशान-ए-ख़तत बर गिर्द-ए-लब
हमचूँ हूरानन्द गिर्द-ए-सल्सबील

नावक-ए-चश्म-ए-तू दर हर गोशः
हम चू मन उफ़्तादः दारद सद क़तील

यारब ईं आतिश कि दर जान-ए-मनस्त
सर्द कुन ज़ाँसाँ कि कर्दी बर ख़लील

मन नमीयाबम मजाल अय दोस्ताँ
गरचः ऊ दारद जमाले बस जमील

पाये मा लंगस्त-ओ-मंज़िल बस दराज
दस्त-ए-मा कोताह ओ ख़ुर्मा बर नख़ील

हुस्न-ए-ईं नज़्म अज़ बयाँ मुस्तग़नी अस्त
बर फ़रोग़-ए-ख़ुर कसे जोयद दलील

आफ़रीन बर किल्क-ए-नक़्क़ाशे कि दाद
बक्र-ए-मा'नी रा चुनीं हुस्न-ए-जमील

मौ'जज़ास्त ईं शे'र या सहर-ए-हलाल
हातिफ़ आवर्द ईं सुख़न या जिब्रील

कस नदानद गुफ़्त शे'रे ज़ीं' नमत
कस न आरद सुफ़्त दुरें ज़ीं क़बील

हाफ़िज़ा गर मा'ने दारी बिआर
वर्नः दा'वा नेस्त ग़ैर अज़ क़ाल-ओ-क़ील

37.

अरी स्वर्ग है तेरा मुख, ये अधर स्वर्ग के निर्झर
आर्द्र किया है इन दोनों ने हृदय और प्राणों को।

तेरे अधरों के समीप अँकुरी श्यामल रोमाली
मानो स्वर्ग प्रपातों को घेरे बैठीं श्यामाएं।

कैसी है करतूत भला यह तेरे नेत्र-शरों की
मुझ जैसे शत-शत निहतों से भर रखते हर कोना।

यह जो मेरे प्राणों में बैठी भीषण दाहकता
इसको शीतल कर दे प्रभु ज्यों की खलील की ज्वाला।

ऐ मेरे मित्रो, मुझमें ही शक्ति नहीं है ऐसी
यद्यपि उसकी सुषमा तो सुंदरतम से भी सुन्दर।

लँगड़े मेरे पैर और लम्बी है मेरी मंजिल
ओछे मेरे हाथ, छुहारा है दरख्त पर ऊँचा।

अभिव्यंजन से है स्वतंत्र इस कविता की सुन्दरता
सूर्यप्रभा के लिए खोजता है प्रमाण कब कोई।

धन्यवाद है चित्रकार की उस अद्भुत तूली को
रूप राशि से सजा दिया जिसने कि अर्थ-क्वाँरी को।

चमत्कार है काव्य चरण ये या विधिसम्मत जादू
ऐसी बातें तो संभव जिब्रील याकि हातिफ से।

इस प्रकार से कविता कहना नहीं जानता कोई
इस प्रकार मोती को पोना नहीं जानता कोई।

हाफ़िज़ अगर जानता है तो अर्थ बता तू इसका
और नहीं तो सिवा तर्क कुछ धरा न इन दावों में।

38

अगर बरख़ेज़द अज़ दस्तम कि बा दिलदार बिनशीनम
ज़ जाम-ए-वस्ल मय नोशम ज़ बाग़-ए-ख़ुल्द गुल चीनम

शराब-ए-तल्ख़-ए-सूफ़ी सोज़ बुनियादम न ख़्वाहद बुर्द
लबम बर लब निह अय साक़ी व बिसिताँ जान-ए-शीरींनम

लबत शक्कर ब मस्ताँ दाद व चश्मत मय बमयख़्वाराँ
मनम कज़ ग़ायत-ए-हिर्माँ न बा आनम न बा ईनम

चू हर ख़ाके कि बाद आवर्द फ़ैज़े बूद व इनआ'मे
ज़ हाल-ए-बन्द: याद आवर कि ख़िदमतगार-ए-देरीनम

मगर दीवान: ख़्वाहम शुद दरीं सौदा कि शब तारोज़
सुख़न बा माह मीगोयम परी दर ख़्वाब मीबीनम

न हर कू नक़्श-ए-नज़्मे ज़द कलामश दिल पज़ीर आमद
तदर्व-ए-तुर्फ़ा मीगीरम कि चालाकस्त शाहीनम

रमूज़-ए-इ'श्क़-ओ-सरमस्ती ज़ मन बिश्नौ न अज़ हाफ़िज़
कि बा जाम-ओ-कदह हर शब हरीफ़-ए-माह-ओ-पर्वीनम

38.

अगर कभी संभव हो मुझको, बैठ सकूँ प्रियतम के पास
तो संयोग चषक से मद पी नन्दन वन के फूल चुनूँ।

सूफ़ी की दाहक मदिरा से हिल न सकेगी मेरी नींव
साक़ी रख दे अधर अधर पर ले ले मेरे मीठे प्राण।

मस्तों को देती अधरामृत, मद्यप जन को नयन-सुरा
मैं तेरी विभूति से वंचित यह भी वह भी कुछ न हुआ।

लेकर आई हवा जिसे वह हर रजकण है कृपा-प्रसाद
मुझ सेवक की भी सुधि लेना, मैं हूँ एक पुरातन भृत्य।

शायद मैं होऊँ दीवाना क्योंकि रात से भोर तलक
करता हूँ बतकही चाँद से, सपने में देखूँ परियाँ।

ऐसा नहीं कि जो भी लिख दे कविता, वह मन भाये ही
अजब चकोर पकड़ लाता मैं क्योंकि चतुर है मेरा बाज।

हाफ़िज़ से क्या, मुझ से सुन तू प्रेम और मस्ती का मर्म
चन्द्र कृत्तिका का हर निशि में सुरा-पात का मैं साथी।

39.

दर ख़राबात-ए-मुग़ाँ नूर-ए-ख़ुदा मीबीनम
वीं अ'जब बीं कि चि नूरे ज़ कुजा मीबीनम

केस्त दुर्दे कश-ए-ईं मयकदः यारब कि दरश
किब्लः-ए-हाजत-ओ मह्राब-ए-दुआ' मीबीनम

जल्वः बर मन मफ़रोश अय मलिक-उल-हाज कि तू
ख़ानः मीबीनी व मन ख़ानः-ए-ख़ुदा मीबीनम

सोज़-ए-दिल अश्क-ए-रवाँ आह-ए-सहर नालः-ए-शब
ईं हमः अज़ असर-ए-लुत्फ़-ए-शुमा मीबीनम

हर दम अज़ रू-ए-तू नक़्शे ज़नदम राह-ए-ख़याल
बा कि गोयम कि दरीं पर्द चिहा मीबीनम

कस नदीदस्त ज़ मुश्क-ए-ख़ुतन ओ-नाफ़ः-ए-चीं
आँ चि मन हर-सहर अज़ बाद-ए-सबा मीबीनम

नेस्त दर दायरः यक नुक़्तः ख़िलाफ़ अज़ कम-ओ-बेश
कि मन ईं मस्अलः बे चून-ओ-चिरा मीबीनम

मनसब-ए-आ'शिक़ी-ओ-रिन्दी-ओ-शाहिद बाज़ी
हमः अज़ तर्बियत-ए-लुत्फ़-ए-शुमा मीबीनम

दोस्ताँ ऐ'ब-ए-नज़रबाज़ी-ए-हाफ़िज़ मकुनीद
कि मन ऊरा ज़ मुहब्बान-ए-ख़ुदा मीबीनम

39.

पीरे मुगाँ की मधुशाला में मैंने देखा ईश प्रकाश
और अचंभा तो यह देखो, देख रहा मैं कहाँ प्रकाश!

भगवन इस मधुशाला में तलछट पीने वाला यह कौन
उसके दर हाजत का किब्ला और दुआओं का मेहराब।

अपना गौरव मत बतला तू मुझको ऐ हाजी सरदार
तूने तो केवल घर देखा, मैं देखूँ घर का भगवान।

दिल की जलन, ढुलकते आँसू, प्रातकाल के ये उच्छवास
और रात का रोदन, ये सब मुझको तेरे कृपा प्रसाद।

सदा डालती तेरी मुख-छवि मेरे मन-पथ पर डाके
किससे कहूँ, यहाँ मैं क्या-क्या देख रहा इस परदे में।

खुतन-चीन की कस्तूरी में नहीं किसी ने वह देखा
मैं जो देखा करता प्रतिदिन प्रात पवन के झोंको में।

इस परिसीमा में न कहीं भी एक बूँद कम या ज्यादा
इस प्रसंग को देख रहा मैं बिना किसी क्या या क्यों के।

प्रिय बनने की ललक, पियक्कड़न भी और प्रिया की चाह
इन सबके पालन पोषण में कृपा तुम्हारी देख रहा।

ऐ मेरे मित्तो, हाफ़िज को न दो नजरबाजी का दोष
मैं तो उसको देख रहा हूँ परमेश्वर के प्यारों में।

40.

इ'श्क़बाज़ी-ओ-जवानी-ओ-शराब-ए-ला'ल फ़ाम
मजलिस-ए-इंस-ओ-हरीफ़-ए-हमदम-ओ-शुर्ब-ए-मुदाम

साक़ी-ए-शक्कर दहान-ओ-मुतिब-ए-शीरीं सुख़न
हमनशीन-ए-नेक किर्दार-ओ-हरीफ़-ए-नेकनाम

शाहिदे दर लुत्फ़-ओ-पाकी रश्क-ए-आब-ए-ज़िन्दगी
दिलबरे दर हुस्न-ओ-ख़ूबी ग़ैरत-ए-माह-ए-तमाम

बाद:-ए-गुलरंग-ओ-तल्ख़-ओ-अ'ज़र ख़ुशख़्वार-ओ-सुबुक
नुक़्ले अज़ ला'ल-ए-निगार-ओ-नुक़्ले अज़ याक़ूत-ए-जाम

बज़्म गाहे दिलनशीं चूँ क़स्र-ए-फ़िर्दौस-ए-बरीं
गुलशने पैरामनश चूँ रोज़:-ए-दार-उस्-सलाम

सफ़नशीनाँ नेकख़्वाह-ओ-पेशकाराँ बाअदब
दोस्तदाराँ साहिब-ए-सिर्र-ओ-हरीफ़ाँ दोस्तकाम

ग़म्ज़:-ए-साक़ी बयग़्मा-ए-ख़िरद आहिख़्तातेग़
ज़ुल्फ़-ए-दिलबर अज़ बराए सैद-ए-दिल गुस्तर्द:दाम

हर कि ईं सुह्बत बिजोयद ख़ुशदिली ब रू-ए-हलाल
व आँ कि ईं इशरत न ख़्वाहद ज़िन्दगी ब रू-ए-हराम

40.

यौवन हो भरपूर, प्रेम हो और रँगीली मदिरा
मन के मीत, प्रेम की मजलिस और निरन्तर पीना।

पिकबयनी मधुबाला होवे और सुरीले गायक
हों चरित्र के धनी सखा सब, हों सब मित्र सुनामी।

हो ऐसी प्रियतमा, अमृत भी ईर्ष्या से घुट जाये
उस कोमल का रूप देख कर पूर्ण चन्द्र लज जाये।

फूलों के रँग भीनी, सुखदा मदिरा ऐसी तीखी
एक घूँट प्याले का ले तो दूजा प्रिया अधर का।

इन्द्रलोक से भी ऊँचे पर महफिल जमे हमारी
नन्दन वन हो चकित, हमारे उपवन की रचना पर।

सदा रहे साथी शुभ चिन्तक, मित्र मर्म के ज्ञाता
एक लक्ष्य के सहकर्मी हों, विनयशील हों सेवक।

बुद्धि लूटने, असि खींचे हों हाव भाव साक़ी के
मन-मृगया के लिए बिछे हों अलक जाल प्रियतम के।

उनका जीवन शुभ प्रमोदमय जो इनको अपनाते
अनुचित दूषित उनका जीवन जो इनसे कतराते।

41.

मुज्दः-ए-वस्ल-ए तू कू कज़ सर-ए-जाँ बर ख़ेज़म
ताइर-ए-क़ुद्सम व अज़ दाम-ए-जहाँ बरख़ेज़म

व विला-ए-तू कि गर बंदः-ए-ख़ेशम ख़्वानी
अज़ सर-ए-ख़्वाजगी-ए-कौन-ओ-मकाँ बर ख़ेज़म

बर सर-ए-तुर्बत-ए-मन बे मय-ओ-मुत्रिब मनशीं
ता ब बूयत ज़ लहद रक़्स कुनाँ बर ख़ेज़म

ख़ेज़ ब बाला नुमा अय बुत-ए-शीरीं हरकात
कज़ सर-ए-जान-ओ-जहाँ दस्त फ़शाँ बर ख़ेज़म

गरचे पीरम तू शबे तंग दर आगोशम गीर
ता सहर गह ज़ किनार-ए-तू जवाँ बर ख़ेज़म

रोज़-ए-मर्गम नफसे मुह्लत-ए-दीदार बिदह
ता चूँ हाफ़िज़ ज़ सर-ए-जान-ओ जहाँ बर ख़ेज़म

41.

कहाँ तुम्हारी मिलन पुकार, कैसे खुले मुक्ति का द्वार
स्वर्गलोक का पंछी मैं कैसे तोड़ूँ भव बन्धन जाल।

मेरे मन में एक हुलास जो तू माने मुझको दास
शपथ प्यार की, तज दूँगा मैं देश-काल के सब अधिकार।

गायक और सुरा लेकर बैठो तो इस चौखट पर
नाच उठूँगा कब्र भेद कर सौरभ से व्याकुल होकर।

मधुर चाल वाली मूरत मुझे दिखा अपनी सूरत
इस मायावी जग से भी जीवन से भी पा लूँ छुट्टी।

बूढ़ा हूँ पर बनूँ जवान, सुबह हँसे जब भर कर तान
एक रात जो आलिंगन में भर लो तुम मेरा अस्तित्व।

अन्तकाल की यही ललक पाऊँ तेरी एक झलक
तो फिर हफ़िज़ जैसे मैं भी तज दूँ जगत और ये प्राण।

42.

शाह-ए-शामशाद कदाँ ख़ुसो-ए-शीरीं दहनाँ
कि बमिज़गाँ शिकन्द क़ल्ब-ए-हमः सफ़ शिकनाँ

मस्त बिगुज़श्त व नज़र बर मन-ए-दरवेश अन्दाख़्त
गुफ्त कि अय चश्म-ओ-चिराग़-ए-हमः शीरीं सुख़नाँ

ता के अज़ सीम-ओ-ज़रत कीसः तिही ख़्वाहद बूद
बन्दा-ए-मन शव व बरख़ुर ज़ हमः सीम तनाँ

कमतर अज़ ज़र्रः न पस्त मशव मेहर बिवर्ज़
ता ब ख़िल्वतगह-ए-ख़ुर्शीद रसी चर्ख़ ज़नाँ

पीर-ए-पैमानःकश-ए-मा कि रवानश ख़ुश बाद
गुफ़्त परहेज़ कुन अज़ सुह्बत-ए-पैमाँ शिकनाँ

दामन-ए-दोस्त बदस्त आर व ज़ दुश्मन बिगुसल
मर्द-ए-यज़दाँ शव व एमन गुज़र अज़ अहरमनाँ

बर जहाँ तकिया मकुन वर क़दह-ए-मय दारी
शादी-ए-ज़ुहा जबीनाँ ख़ुर व नाज़ुक बदनाँ

बा सबा दर चमन-ए-लालः सहर मीगुफ़्तम
कि शहीदान-ए-कि अन्द ईं हमः ख़ूनी कफ़नाँ

गुफ़्त हाफ़िज़ मन-ओ-तू महरम-ए-ईं राज़ नयेम
अज़ मय-ए-ला'ल हिकायत कुन व शीरीं दहनाँ

42.

मिष्ट भाषियों का जो अधिपति शमशादों का जो सिरताज
हृदय तोड़ देता पलकों से रथियों के सिरमौरों का।

मस्ती से चलते जब उसकी इस फकीर पर नजर पड़ी
''ऐ मिठबोलों के दृगतारे मुझको यों सम्बोध गया।''

कब तक और रहोगे वंचित स्वर्ण-रजत के वैभव से
मेरा सेवक बन कर चख तू फल जो उजले तन का है।

अपने को लघु-हीन न समझो, हृदय प्रेम से भर लो जो
तो उस निर्जन व्रती सूर्य तक चक्र-चक्र बढ़ तुम पहुँचो।

वय:प्राप्त उस मदपायी की आत्मा को सुख-शान्ति मिले
वह उनसे बचने को कहता वचन तोड़ देते हैं जो।

रहो मीत के साथ हाथ गह, रिपु से कोसों दूर रहो
परम पुरुष से जुड़ो और शैतानों से नाता तोड़ो।

जो तुम जग का छोड़ भरोसा मदिरा के आनन्द जिओ
उज्ज्वल भाल सुकोमलांगियों के सुख से तुम सुखी रहो।

लोहित सजल कुसुम कानन में मैंने यों पूछा प्रात:
अरी हवा, तू बता कि ये रक्ताक्त कफनवाले हैं कौन?

इस पर बोली हवा कि हाफ़िज हम तुम क्या जानें यह राज़
यह तो अमृतभाषियों से या लोहित मदिरा से पूछो।

43.

सुब्हस्त साक़िया क़दहे पुर शराव कुन
दौर-ए-फ़लक दरंग नदारद शिताव कुन

ज आँ पेशतर कि आ'लम-ए-फ़ानी शवद ख़राब
मारा ज़ जाम-ए-बादः-ए-गुलगूँ ख़राब कुन

ख़ुर्शीद-ए-मय ज़ मश्रिक़-ए-साग़र तुलूअ'कर्द
गर बर्ग-ए-ऐश मी तलबी तर्क-ए-ख़्वाब कुन

रोज़े कि चर्ख़ अज़ गिल-ए-मा कूज़हा कुनद
ज़िन्हार कासः-ए-सर-ए-मा पुर शराब कुन

मा मर्द-ए-ज़ुहद-ओ-तौबः-ओ-तामात नेस्तेम
बा मा ब जाम-ए-बादः-ए-साफ़ी ख़िताब कुन

कार-ए-सवाब बादः परस्तीस्त हाफ़िज़ा
बर ख़ेज़ व रू-ए-अ'ज़्म् ब कार-ए-सवाब कुन

43.

हुई भोर, झट भरदे प्याला आसव से मधुबाले,
यह आकाश महा गतिशाली, समय नहीं रुकने का।

यह नश्वर जग मिटे कि इससे पहले मुझे पिला कर
गुलरंगी मदिरा का प्याला, मुझसे मुझे मिटा दे।

प्याले के पूरब से देखो उगा सूर्य मदिरा का
जीवन की मस्ती जो चाहो तो निद्रालस त्यागो।

जिस दिन गढ़ दे गगन हमारी मिट्टी लेकर प्याला
तभी हमारी सिर की लुटिया मदिरा से भर देना।

संयम नियम और बढ़ चढ़ की बातों से हमको क्या
हमको तो सम्बोधन कर तू पावन मधु प्याले का।

इस जगती में है पवित्र कर्त्तव्य सुरा की पूजा
उठो उठो हाफ़िज़ इस पथ का हो संकल्प तुम्हारा।

44.

मज़्रा'-ए-सब्ज-ए-फ़लक दीदम-ओ-दास-ए-मह-ए-नौ
यादम अज़ किश्तः-ए-ख़ेश आमद ओ हंगाम-ए-दि रौ

गुफ़्तम अय बख़्त ब ख़ुप्सीदी-ओ-ख़ुर्शीद दमीद
गुफ़्त बा ईं हमः अज़ साबिक़ः नौमीद मशौ

तकियः बर अख़्तर-ए-शबगर्द मकुन कीं अ'य्यार
ताज-ए-काऊस रबूद ओ कमर-ए-कै ख़ुसौ

गर रवी पाक-ओ-मुजर्रद चू मसीहा ब फ़लक
अज़ फ़रोग़-ए-तू ब ख़ुर्शीद रसद सद पर्तौ

आस्मौं गो मफ़रोश ईं अ'ज़्मत कि अन्दर इ'श्क़
ख़िर्मन-ए-मह ब जौए खोशः-ए-पर्वी ब दो जौ

गोशवार-ए-दुर्र-ओ-ला'ल अर चः गराँ दारद गोश
दौर-ए-ख़ूबी गुज़ारानस्त नसीहत बिश्नौ

चश्म-ए-बद्दूर ज़ ख़ाल-ए-तू क दर अ'र्सः-ए-हुस्न
बैज़क़े रानद कि बुर्द अज़ मह-ओ-ख़ुर्शीद गिरौ

हर कि दर मज़्रा'-ए-दिल तुख़्म-ए-वफ़ा सब्ज़ नकर्द
ज़र्द-रू-ए-कसद अज़ हासिल-ए-ख़ुदगाह-ए-दिरौ

आतिश-ए-ज़र्क़-ओ-रिया ख़िर्मन-ए-दीं ख़्वाहद सोख़्त
हाफ़िज़ ईं ख़िर्क़ः-ए-पशमीनः बि अन्दाज-ओ-बिरौ

44.

नभ की हरी फसल जब देखी और अर्ध विधु का हँसिया
अपनी खेती और उसे कर्तन का समय याद आया।

मैंने कहा, सूर्य उग आया, अरे भाग्य तू सोया है
वह बोला, तू मत निराश होना इन सारी बातों से।

निशिचारी इस छली सितारे पर तू मत करना विश्वास
कै खुसरो का कमरबन्द, काऊस-ताज का यह हर्ता।

ब्रह्मचर्य रत और शुद्ध ईसा ज्यों तू पहुँचे नभ पर
तो तेरी द्युति से सूरज तक सौ-सौ किरणें पहुँचेंगी।

नभ से कह दो डींग न हाँके क्योंकि प्रेम में शशि-खलिहान
केवल जौ भर, और कृत्तिका की बाली दो जौ जितनी।

पहन लाल-मोती की बाली, भले लगे कानों को भार
बीत रहा सुन्दरता का युग, मेरी सम्मति को तू मान।

रूप-बिसात बिछा कर, तिल-प्यादे की कुछ यों चाल चली,
बुरी नजर से ईश बचाए, चन्द्र-सूर्य भी मात हुए।

मन की खेती में जिसने भी बोया नहीं वफा का बीज
प्राप्ति देख मुख मलिन हुआ, जब आया समय कटाई का।

छल छन्दों की आग, भस्म कर देगी मजहब का खलिहान
हाफ़िज़ जल्दी भाग, फेंक कर यह पश्मीने का चोला।

45.

दोश रफ़्तम व दर-ए-मयकद: ख़्वाब आलूद:
ख़िर्क़: तर दामन व सज्जाद: शराब आलूद:

आमद अफ़सोस कुनाँ मुग़बच्च: बाद: फ़रोश
गुफ़्त बेदार शव अय रहरव-ए-ख़्वाब आलूद:

शुस्त-ओ-शवी कुन व आँगह ब ख़राबात ख़िराम
ता न गर्दद ज़ तू ईं दैर खराब आलूद:

बहवा-ए-लब-ए-शीरीं दहनाँ चन्द कुनी
जौहर-ए-रूह व याक़ूत-ए-मुज़ाब आलूद:

बतहारत गुज़राँ मंज़िल-ए-पीरी व मकुन
ख़ल्अ'त-ए-रौब ब तश्रीफ़-ए-शबाब आलूद:

पाक-ओ-साफ़ी शव व अज चाह-ए-तबीअ'त बंदर आई
कि सफ़ाये नदहद आब-ए-तराब आलूद:

गुफ़्तम अय जान-ए-जहाँ दफ़्तर-ए-गुल ऐ'बे नीस्त
कि शवद वक़्त-ए-बहार अज मय नाब आलूद:

आश्नायान-ए-रह-ए-इ'श्क़ दरीं बहर-ए-अ'मीक़
ग़र्क़: गश्तन्द व न गश्तन्द ब आब आलूद:

गुफ़्त हाफ़िज़ बिरौ व नुक्त: ब याराँ मफ़रोश
आह अज़ीं लुत्फ़ ब नवा-ए-इ'ताब आलूद:

45.

तन्द्रा में कल रात गया मैं मधुशाला के द्वार
आसन और गूदड़ी दोनों भीगे थे मदिरा से।

नव किशोर वय मधु विक्रेता खेद भरी वाणी में
मुझसे बोला, चेतो राही, तुम तो पंक सने हो।

होओ स्वच्छ नहा धोकर, स्वच्छन्द यहाँ फिर घूमो
ताकि न हो मलीन तुझसे पावन मन्दिर मदिरा का।

मधुर अधर वाले मुख की अभिलाषा में तू कब तक
सिक्त करेगा पिघले मानिक से आत्मा का हीरा।

हों वार्धक्य काल में तेरे सब आचरण पुनीत
यौवन का मत लगा मुखौटा चेहरे पर, इस वय में।

बाहर आ वासना कूप से, स्वच्छ और शुचि होले
क्योंकि तुझे यह गँदला पानी कर न सकेगा निर्मल।

यदि वसन्त ऋतु में फूलों की पुस्तक मधु से भीगे
तो कुछ दोष नहीं है इसमें, ऐ जगती के प्यारे।

प्रेम पंथ से परिचित जन तो इस गहरे सागर में
डुबकी देते हैं फिर भी वे नहीं भीगते जल में।

इस पर वह बोला, बाहर जा, बात बना मत हाफ़िज़
अहा क्रोध की इस वाणी में भरा अनुग्रह उसका।

46.

अय कि दायम बख़ेश मग़रूरी
अगर तुरा इ'श्क़ नेस्त मा'ज़ूरी

गिर्द-ए-दीवानगान-ए-इ'श्क़ मगर्द
कि ब अ'क़्ल अ'क़ील: मशहूरी

मस्ती-ए-इ'श्क़ नेस्त दर सर-ए-तू
रौ कि तू मस्त-ए-आब-ए-अंगूरी

रू-ए-ज़र्दस्त ओ आह-ए-दर्द आलूद
आ'शिक़ाँरा गवाह-ए-रंजूरी

बिगुज़र अज़ नंग-ओ-नाम-ए-ख़ुद हाफ़िज़
साग़र-ए-मय तलब कि मख़्मूरी

46.

अरे सदा तू अपने ही घमण्ड में है
तुझे प्यार जो नहीं मिला तो मजबूरी।

प्रेम दिवानों के ढिग तू मत चक्कर काट
क्योंकि तुम्हारा नाम बुद्धिमानों में है।

तेरे मन में नहीं प्रेम का है उल्लास
चल हट तू तो केवल अंगूरी का मस्त।

पीला मुख हो याकि वेदना की आहें
प्रेमी जन के दुखड़ों के ये साक्षी हैं।

तज दे मान और मर्यादाएँ हाफ़िज़
तू खुमार में है, मदिरा के प्याले माँग।

47.

ईं ख़िर्क़: कि मन दारम दर रह्न-ए-शराब औला
वीं दफ़्तर-ए-वेमा'नी ग़र्क़-ए-मय-नाब औला

चूँ उ'म्र तबाह कर्दम चन्दाँ कि निगाह कर्दम
दर कुंज-ए-ख़राबाते उफ़्तादः ख़राब औला

मन हाल-ए-लि-ए-शैदा बा ख़ल्क़ न ख़्वाहम गुफ़्त
कईं क़िस्सा अगर गोयम बा चंग-ओ-रबाब औला

ता बे सर-ओ-पा बाशद औज़ाअ'-ए-फ़लक ज़ीसाँ
दर सर हवस-ए-साक़ी दर दस्त शराब औला

चूँ मस्लिहत अंदेशी दूरस्त ज़ दरवेशी
हम सीनः पुर आतिश बे हम दीदः पुर आब औला

चूँ पीर शुदी हाफ़िज़ अज़ मयकदः बैरूँ शव
रिन्दी व हवस नाकी दर अ'हद-ए-शबाब औला

47.

पूजा का पाटम्बर बन्धक रख कर मधु को पाना
अच्छा है, पोथियाँ निरर्थक बह जायें मदिरा में।

सोच समझ कर देखा मैंने वृथा गँवाया जीवन
अच्छा है, मधुशाला में पी पड़ा रहूँ कोने में।

नहीं कहूँगा दुनिया को मन की मस्ती की बातें
और अगर बतलाऊँगा तो चंग रबाब बजा कर।

जब ऐसी हालत है नभ की बेसिर पैर पड़ा है
इससे तो अच्छा, मन में साक़ी हो कर में प्याला।

दुनियादारी से रहती है सदा साधुता दूर
इसीलिए शोभन है दिल में आग, आँख में पानी।

अब तो बुढ़ा गये हो हाफ़िज़ छोड़ो भी मधुशाला
तृष्णा और कामना लगती युवाकाल में अच्छी।

48.

रफ़्तम ब बाग़ ता कि बिचुनेम सहर गुले
आमद बगोश नागहम आवाज़-ए-बुलबुले

मिस्कीं चू मन ब इ'श्क़-ए-गुले गश्तः मुब्तला
व अन्दर चमन फ़गन्दः ब फ़रियाद ग़ुलग़ुले

मीगश्तम अन्दर आँ चमन-ओ-बाग़ दमबदम
मीकर्दम अन्दर आँ गुल-ओ-बुलबुल ताम्मुले

चूँ कर्द दर दिलम असर आवाज़-ए-अं'दलीब
गश्तम चुनाँ कि हेच न मानदम तहम्मुले

बस गुल शिगुफ़्तः मीशवद ईं बाग़रा वले
कस बे जफ़ा-ए-ख़ार नचीदस्त अज़ गुले

गुल यार-ए-ख़ार गश्तः व बुलबुल क़रीन-ए-इ'श्क़
आँरा तग़य्युरे व न ईं रा तबद्दुले

हाफ़िज़ मदार उम्मीद-ए-फ़रह अज़ मदार-ए-चर्ख़
दारद हज़ार ऐ'ब व न दारद तफ़ज़्ज़ुले

48.

एक गुलाब चुनूं इस खातिर गया बाग में प्रातः
वहाँ सुनाई पड़ी अचानक बुलबुल की आवाज।

मुझ जैसी वह भी गुलाब के प्यार पगी दुखियारी
उसके करुण स्वरों से भर कर उपवन काँप रहा था।

पुष्पवाटिका में फिरता मैं सोच रहा था मन में
कैसा है सम्बन्ध हृदय का इस गुलाब-बुलबुल का।

बुलबुल के वे व्यथा विकल स्वर मुझमें यों घिर आये
भूल गया सुध बुध मैं अपनी, धीरज छूट गया था।

उपवन में खिलते ही रहते हैं गुलाब बहुतेरे
लेकिन काँटों से बच कर कब किसने इनको पाया।

गुल के संग शूल रहते हैं, बुलबुल के सँग प्यार
न तो शूल को तजता है गुल और न बुलबुल प्यार।

यह आकाश शून्य है हाफ़िज़, मत कर सुख की आशा
इसमें केवल दोष भरे हैं, यहाँ नहीं है करुणा।

49.

नसीम-ए-सुब्ह सआ'दत बदाँ निशाँ कि तू दानी
ख़बर ब कू-ए-फ़ुलाँ बर बदाँ ज़ुबाँ कि तू दानी

तू पैक-ए-हज़्रत-ए-शाही मरा दो दीदः बराहस्त
करम नुमा व बिफ़र्मा ख़बर चुनाँ कि तू दानी

बिगोकि जान-ए-ज़ई'फ़म ज़ दस्त रफ़्त ख़ुदारा
ज़ ला'ल-ए-रूह फ़िज़ायत बिबख़्श आँ कि तू दानी

मन ईं दो हर्फ़ नविश्तम चुनाँ कि ग़ैर न दानस्त
तू हम ज़ रू-ए-करामत चुनाँ बिख़्वाँ कि तू दानी

ख़याल-ए-तेग़-ए-तू बा मन हदीस-ए-तश्नः-ओ आबस्त
असीर-ए-इ'श्क़-चूकर्दी बिकुश चुनाँ कि तू दानी

उम्मीद दर कमर-ए-ज़र कशत चिगूना बिबन्दम
दक़ीक़:ऐस्त निगारा दराँ मियाँ कि तू दानी

यकेस्त तुर्की व ताज़ी दरीं मुआ'मलः हाफ़िज़
हदीस-ए-इ'श्क़ बयाँ कुन बहर-ज़ुबाँ कि तू दानी

49.

अरी सुबह की हवा शुभे, उस पुष्प गली का पता तुझे
ले जा मेरी खबर वहाँ उस भाषा में जो तुझको ज्ञात।

राजसभा की तू सांवादिक, मेरे नयन प्रतीक्षा में
मुझ पर करके दया सुना तू समाचार जो तुझको ज्ञात।

कृपया कह तू उसे, हाथ से गये हमारे दुर्बल प्राण
आत्मतुष्टिदायक अधरों से अब वह सुना तुझे जो ज्ञात।

मैंने ये दो हरफ लिखे यों जिसे न कोई समझ सके
तू भी कृपया इनको यों पढ़ हों ये केवल तुझको ज्ञात।

मेरे लिए तुम्हारी असि का ख्याल प्यास-जल की गाथा
किया प्रेम का बंदी तो फिर मुझे मार ज्यों तुमको ज्ञात।

तेरी स्वर्ण मेखला से कैसे बाँधूँ अपनी आशा
इसके बीच बात कुछ ऐसी जो ऐ प्रियतम तुझको ज्ञात।

इस प्रसंग में तो है हाफ़िज़ तुर्की अरबी एक समान
प्रेम कहानी हर भाषा में कह तू जो है तुझको ज्ञात।

50.

गुफ़्तम कि ख़ता कर्दी व तदबीर न ईं बूद
गुफ़्त: चि तवाँ कर्द कि तक़दीर चुनीं बूद

गुफ़्तम कि खुदा दाद मुरादत व विसालश
गुफ़्त: कि मुरादम व विसालश न हमीं बूद

गुफ़्तम कि करीन-ए-बदत अफ़गन्द ब्दीं रोज
गुफ़्त: कि मरा बख़्त-ए-बद-ए-ख़्वेश क़रीं बूद

गुफ्तम ज मन अय माह चिरा मेहर बुरीदी
गुफ़्त: कि फ़लक बा मन-ए-बद मेहर बकीं बूद

गुफ़्तम कि बसे जाम-ए-तरब ख़ुर्दी अजीं पेश
गुफ़्त: कि शिफ़ा दर क़दह-ए-बाज पसीं बूद

गुफ़्तम कि तू-अय उ'म्र चिरा जूद बिरफ़्ती
गुफ़्त: कि फ़ुलाने चिकुनम उ'म्र हमीं बूद

गुफ़्तम कि बसे ख़त-ए-जफ़ा बर तू कशीदन्द
गुफ़्त: हम: आँ बूद कि बर लौह-ए-जबीं बूद

गुफ़्तम कि न वक़्त-ए-सफ़रत बूद चुनीं जूद
गुफ़्त: कि मगर मस्लिहत-ए-वक़्त चुनीं बूद

गुफ़्तम कि ज हाफ़िज ब चि इ'ल्लत शुद: दूर
गुफ़्त: कि हम: वक़्त मुरादाइ'मा ईं बूद

50.

मैंने कहा, भूल की तूने, ठीक नहीं थी तेरी राह
वह बोली, क्या करती, मुझको ऐसा ही कुछ भाग्य मिला।

मैंने कहा, मिलन की तेरी इच्छा प्रभु ने की पूरी
वह बोली कामना मिलन की सिर्फ न इतनी थी उससे।

मैंने कहा, तुझे दुर्दिन में बुरे संग ने डाला है
वह बोली, मेरा तो केवल बुरा भाग्य ही साथी था।

मैंने कहा, चन्द्रिमे, मुझसे प्रेम बन्ध क्यों तोड़ चली
वह बोली, इसलिए क्योंकि हो गया व्योम मेरा वैरी।

मैंने कहा, पिये तूने बहु मोद पात इससे पहले
यह बोली, मेरा केवल अन्तिम प्याले में था उपचार।

मैंने कहा, आयु, तू क्यों चल पड़ी भला इतनी जल्दी
वह बोली, क्या करूँ, मुझे तो इतनी ही बस आयु मिली।

मैंने कहा, उन्होंने तुझ पर खींची जुल्मी रेखाएँ
वह बोली, वे वे ही थीं जो भाग्य शिला पर अंकित थीं।

मैंने कहा, गमन का तेरा समय न इतनी जल्दी था
वह बोली, काल का कदाचित् ऐसा ही कुछ निश्चय था।

मैंने कहा, बता हाफ़िज़ से किस कारण तू दूर हुई
वह बोली, मेरी इच्छा तो सदा-सर्वदा यही रही।

जाद की तुक	जाद, उर्दू फारसी का एक अक्षर जिसके वर्ण साम्य के शब्द दुर्लभ हैं।
समरकन्द-बुखारा	तुर्किस्तान के पुराने विख्यात नगर (अब उजबैकिस्तान में हैं)
रुक्नाबाद नहर	ख्वाजः हाफ़िज़ के शहर शीराज़ की नहर जिसका पानी नीला था।
मुसल्ला का कानन	शीराज़ के बग़ीचे जहाँ गुलाब खिलते थे।
यूसुफ-जुलेख़ा	कुर्आन शरीफ के अनुसार हज़्रत यूसुफ़ एक पैगम्बर थे (हज़्रत याकूब के पुत्र)। फ़ारसी एवं उर्दू काव्य में इन्हें सौन्दर्य का प्रतीक माना जाता है। मिस्र प्रदेश की रानी जुलेख़ा इन पर आसक्त हो गई थी।
नूह की नौका	कुर्आन शरीफ के अनुसार खंड प्रलय के बाद हज़्रत नूह बच गये थे। उन्होंने अपनी नौका में हर प्राणी का एक जोड़ा सुरक्षित रख लिया था जिससे पुनः सृष्टि आरंभ हुई।
सबा प्रदेश	हज़्रत दाऊद के पुत्र हज़्रत सुलेमान का शुमार पैगम्बरों में है। वे अपनी प्रियतमा बिलकीस के पास अपना संदेश जिस पक्षी के द्वारा भेजते थे उसका नाम हुद्हुद है। बिलकीस सबा प्रदेश की रानी थी।
शेख़ सनाअ	फ़रीदउद्दीन अत्तारी के मुरशिद थे। ये एक लड़की पर आसक्त हो गए थे।
आसिफ	ये हज़्रत सुलेमान के वज़ीर थे। हज़्रत सुलेमान के लिए कहा जाता है कि वे हवा की सवारी करते थे और पक्षियों से बातें किया करते।
इरम कानन	कुर्आन शरीफ के मुताबिक अदन के पास शद्दाक नामक राजा ने मरुस्थल में एक उद्यान बनाया था

जो ईश कोप से वहां के बाशिंदों सहित नष्ट हो गया।

सम्बुल	फारसी-उर्दू कविता में सुन्दर केशों का उपमान मानी जाने वाली एक सुगंधित घास।
जम का विश्वदर्शी प्याला	कहते हैं कि फारस के बादशाह जमशेद के पास एक ऐसा प्याला था जिसमें वह विश्व-दर्शन कर लेता था।
अन्न का दाना	बाइबिल और कुर्आन के अनुसार ईश्वर ने माटी से पहला मानव आदम को बनाया और एक फल विशेष को खाने से मना किया। जब ईश आज्ञा का उल्लंघन कर उसने फल खा लिया तो उसे स्वर्ग से निकलना पड़ा। कुर्आन के अनुसार वह फल गेहूँ था। यहाँ उसी घटना की ओर संकेत है।
सरौ-गुलौ-लाला	हाफ़िज़ के समय में बंगाल के गवर्नर गयास-उद-दीन की सर्व, गुल और लाला नाम की तीन सेविकाएं थीं। सर्व एक वृक्ष का भी नाम है जिसकी उपमा प्रियतम के कद से दी जाती है। गुल गुलाब के लिए प्रयुक्त होता है और लाला (टुलिप) एक फूल है जिसमें बहुत से चिह्न होते हैं।
बंगाल	इस ग़ज़ल का पहला मिसरा बंगाल के गवर्नर गयास-उद-दीन ने कह कर ग़ज़ल की पूर्ति के लिए ख्वाजा हाफ़िज़ शीराज़ी के पास भेजा तो उसे पूर्ण करके उन्होंने वापस बंगाल भिजवाया। इसमें एक शेर में कहा गया है कि एक रात का बच्चा एक साल के सफर पर जा रहा है। शायद इस ग़ज़ल की रचना एक रात में हुई हो और वहाँ से बंगाल पहुँचने में एक साल लगता हो।
सामरी	हज़रत मूसा के समय का एक जादूगर जो एक

	बछड़े में आसक्त था और उसकी पूजा करता। औरों को भी उसकी पूजा करने को कहता था।
ख़िज़्र	एक पैगम्बर जिन्हें पथ-प्रदर्शक कहा जाता है। कहते हैं कि सिकन्दर के साथ वे अमृत की तलाश में निकले थे। ख़िज़्र को अमृत मिल गया और वे अमर हो गये।
बनफ़्शा	औषधि के काम आने वाला एक पौधा
आद-समूद	कुर्आन के अनुसार वे नास्तिक जिन्होंने ईश-आज्ञा को ठुकराया और अन्त में वे नाश को प्राप्त हुए।
ईसाई साँस	कुर्आन शरीफ के मुताबिक हज़्रत ईसा की फूंक से मुर्दे जी जाते थे।
सोसन	फारसी कविता में जबान का उपमान एक फूल जो लालिमा युक्त है।
दाऊदी संगीत	एक पैगम्बर संगीतकार जिसके संगीत में दैविक शक्ति थी।
इमाम-उद-दीन महमूद	ये हाफ़िज़ के समय में बादशाह शेख आबू इसहाक़ के वजीर थे और ख्वाजा हाफ़िज़ की बड़ी इज़्ज़त करते थे। उन्हें हाफ़िज़ ने युग का आसिफ़ कहा है।
ऐमन घाटी	इस घाटी में तूर की पहाड़ी पर हज़्रत मूसा को ईश्वरीय प्रकाश दिखाई दिया था।
जाफराबाद	शीराज़ का एक इलाका
मुसल्ला	देखें टिप्पणी-2
जिब्रील	ईश्वर का प्रिय फरिश्ता जो पैगम्बरों के पास ईश्वर का पैगाम लाता है।
अकीक़	लाल रंग का एक कीमती पत्थर

शमशाद	उर्दू-फारसी कविता में नायिका के कद का उपमान एक लम्बा सुंदर पेड़।
शक़ायक	एक पुष्प (टुलिप)
ख़लील	हज़रत इब्राहिम की उपाधि
हातिफ़	एक फरिश्ता
हाजत का किब्ला	आशा का केन्द्र
खुतन चीन की कस्तूरी	खुतन चीन का एक प्रान्त है जहाँ कस्तूरी मृग पाए जाते हैं।
कैखुसरो, काऊस	इरान के बादशाह

